वैदिकसाहित्य

लेखक एवं प्रकाशक

धर्मपाल कपूर

बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.

कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

संस्करण : 2012
प्रतियाँ :

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11, पंचकूला
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

टंकण एवं साजसज्जा : **अभिनव इंटरप्राइजिज, मो. 94683 40497**
मुद्रक :

भूमिका

वैदिकसाहित्य-परिचय

अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है ।
है मुर्दा वह देश जहाँ साहित्य नहीं है ।।

–सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

साहित्य देवासुर संग्राम में सागर मंथन से निकला कोई रत्न भले ही न हो, परन्तु यह मानव जीवन-सरिता में खिला एक अद्‌भुत कमल है, जन-जीवन-सागर के मंथन से प्राप्त एक अमूल्य अमृतधारा एवं अमूल्य मणि है । साहित्य मानव-सभ्यता का वह प्रकाश-स्तम्भ है, जिसके आलोक की रश्मियाँ अज्ञान जड़ता और मूढ़ता के अंधकार का कल्पतरु है ।

साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति 'सहित' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है कि साहित्य वह कृति है जहाँ भाषा एवं भाव का मणि-कंचन की भाँति सुन्दर समन्वय हुआ हो । इसका भाव यह है कि साहित्य वह रचना है जोकि समूची मानव जाति हेतु हितकारी, मंगलकारी एवं कल्याणकारी हो । साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं अपितु वह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष व्यवहार एवं ज्ञान का साधन है । अतः संस्कृत साहित्य में सत्य कहा गया है–

साहितेन भावः स साहित्यं

हित के भावों से भरे को साहित्य कहते हैं;

इसी प्रकार तुलसीदास जी लिखते हैं–

कीरति, भनिति, भूति भलि सोई सुरसरि सम कहँ हितहोई

–रामचरितमानस (बालकाण्ड)

कीर्ति, कविता और सम्पत्ति वही कल्याणकारी होती है जोकि गंगामाता की भाँति सर्वकल्याणकारी हो ।

व्यापक अर्थ में Literature शब्द का निर्माण Letter शब्द से हुआ है जिसका अर्थ है कि जो कुछ भी लिखा जाए वही साहित्य है ।

लिखे हुए का आधार यदि सत्य है तो वह सत् साहित्य और यदि मिथ्या पर आधारित हो तो वह मिथ्या साहित्य कहलाता है। विद्वान् लोग सदैव सत् साहित्य ही लिखते हैं। इसी प्रकार संस्कृत साहित्य में इसको वाङ्मय के नाम से पुकारा जाता है। वाङ्मय शब्द का अर्थ है जिसको वाणी दी जाये। अतः अनुभूति से उत्पन्न विचारों को मधुर शब्दों में अभिव्यक्त करने की कला साहित्य है–

वस्तुतः वैदिक साहित्य अत्यंत विस्तृत था। परन्तु अधिकतर शाखाएं मुसलमान आक्रमणकारियों ने जला डाली। अब निम्नलिखित मुख्य वैदिक साहित्य ही उपलब्ध है।

धर्म पाल कपूर
धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

प्रस्तावना

जाति अभिमान एवम् सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों और दुराग्रहों को यदि छोड़ दिया जाए तो प्रत्येक मनुष्य को यह स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा कि न केवल ऋग्वेद अपितु चारों वेद दुनियाँ के सबसे प्राचीन ग्रन्थ होने के साथ-साथ ईश्वरोक्त भी हैं। कुछ मतान्ध लोग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए अन्य ग्रन्थों को भी इसी कोटि में लाने का दुस्साहस करते हैं, परन्तु जब वैज्ञानिक रीति से तर्क और प्रमाणों की कसौटी पर अन्य ग्रन्थों को कसा जाता है तो उनके इस कथन की निस्सारता एवम् खोखलापन स्वयं प्रगट हो जाता है। तर्क के आईने में वेदों को ईश्वरोक्त सिद्ध करना कठिन नहीं अपितु अत्यन्त सरल है। पहली बात तो यह है कि जैसे उस दयालु परम पिता परमात्मा ने मनुष्य को देखने की शक्ति आंखों को सफल व सार्थक करने के लिए सूर्य जैसे प्रकाशपुंज को बनाया, ठीक उसी प्रकार से उस प्रभु ने हमारी सोचने की शक्ति बुद्धि को सफल और सार्थक करने के लिए ज्ञान के मूल स्रोत वेदों को सृष्टि के आदि में चार ऋषियों, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा थे उनके पवित्रतम अन्तःकरण में प्रगट किया था। हम भलीभाँति जानते हैं कि हमारी आँखों में देखने की शक्ति है, फिर भी उन्हें देखने के लिए बाहरी प्रकाश की आवश्यकता है। घनघोर अंधेरी रात में यह आंखें, देखने की सामर्थ्य होने के बावजूद कुछ नहीं कर सकतीं। ठीक यही स्थिति बुद्धि की है। बुद्धि के लिए भी ज्ञान रूपी सूर्य का होना अनिवार्य है। जैसे सूर्य के बिना आँख व्यर्थ है, उसी प्रकार ज्ञान के बिना बुद्धि का भी क्या औचित्य? ज्ञान-विज्ञान से जुड़े बिना पशु और मनुष्य में कोई अन्तर नहीं रहता। इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि आज तक एक भी अनपढ़ व्यक्ति ने कोई भी वैज्ञानिक खोज नहीं की है क्योंकि बिना शिक्षक के ज्ञान की प्राप्ति हो ही नहीं सकती। कदाचित ज्ञान की इसी

आदान-प्रदान की प्रक्रिया के कारण ऋषि पतंजलि ने कहा है– स एषा पूर्वेषामपिगुरुः कालेन अन्वच्छेदात् (यो.सू. 1.26), यह परमात्मा ही है जो कि पूर्व पुरुषों का भी गुरु है, क्योंकि वह काल की सीमा से बाहर है। इसीलिए वेदों की महत्ता को बताते हुए वर्तमान युग में ऋषि दयानन्द कहते हैं कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।" वेदानुगामी बन कर ही मनुष्य संसार में सब प्रकार का सुख और आनन्द अनुभव कर सकता है, अन्यथा नहीं।

एक प्रश्न अक्सर आर्य जगत् में प्रायः सभी विद्वानों से पूछा जाता है कि ये आर्य समाजी लोग आखिर वेद के पीछे ही क्यों पड़े रहते हैं?उनका कहना है कि माना कि वेद एक प्राचीन ग्रन्थ हैं, इसलिए जिस किसी को शौक होगा अथवा जो कोई इस बात की आवश्यकता समझेगा कि वेदों को पढ़ना चाहिए, वो पढ़ लेगा। उनके हिसाब से यह जरूरी नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति इस ग्रन्थ का अध्ययन करे। यह इस देश के लोगों का दुर्भाग्य ही कहना पड़ेगा कि महाभारत काल के बाद वेद ज्ञान दिनोंदिन विस्मृत ही होता गया और स्वार्थी तथा कपटी लोगों ने अपने लाभ को दृष्टि में रखते हुए ऐसे ग्रन्थों की रचना कर डाली जिससे मानव अधर्म को ही धर्म समझ कर भटक गया। वेद का पढ़ना-पढ़ाना तो दूर आज शिक्षित हिन्दुओं के घरों से भी वेद विलुप्त हो चुके हैं। न जाने कितने लोगों के लिए केवल तुलसी कृत रामायण ही (वाल्मीकि कृत भी नहीं) सबसे बड़ा प्रामाणिक धर्म ग्रन्थ है और बाकी पढ़े लिखे लोगों में एक बहुत बड़ी संख्या यह भी नहीं जानती कि भगवद्गीता के सिवाय हिन्दुओं में और भी कोई प्रामाणिक ग्रन्थ है। इन सभी प्रश्नों के उत्तर में कहना पड़ेगा कि वास्तव में लोग भूले हुए हैं कि वेद मूल हैं और अन्य सभी ग्रन्थ (वो भी यदि वे वेदोक्त हैं तो) उनकी तुलना केवल शाखा, फूल, पत्ती मात्र से ही की जा सकती है। यदि वृक्ष का मूल सुरक्षित है तो सूख जाने पर भी नई पत्तियां निकल

आएंगी, परन्तु मूल को सूखता छोड़ कर केवल फूल पत्तियों में पानी देने से पेड़ हरा भरा नहीं हो सकता । यदि वेद सुरक्षित रहते हैं तो गीता जैसी हज़ारों पुस्तकें फिर से लिखी जाएंगी, परन्तु यदि वेद का लोप हो जाता है तो करोड़ों दूसरे ग्रन्थ मिल कर भी वेद की सृष्टि नहीं कर सकते । वेदों को भुलाने का ही यह परिणाम निकला है कि आज वेदों के स्थान पर अनेक अनार्ष एवम् मिथ्या ग्रन्थों का पठन-पाठन एवम् उन्हीं का प्रचार-प्रसार बड़े जोरों शोरों से पूरे हिन्दू जगत् में किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप नाना प्रकार के मिथ्या मत, पन्थ एवम् सम्प्रदाय इस देश में फल-फूल कर तथा धर्म के नाम पर मनुष्यों को आपस में लड़ा कर मानव जाति का अकल्याण कर रहे हैं । वेदों को यदि इस हिन्दू जाति ने भुलाया न होता तो आज स्थान-स्थान पर पूरे देश के मन्दिरों में महाभागवत् पुराण की कथा न होकर वेद-कथाओं का आयोजन हो रहा होता, लेकिन अफसोस ! इन पुराणों के गपोड़ों ने हिन्दु जाति को इतना नपुंसक बना दिया कि आज तक यह जाति अपने यहाँ एक भी वेद का विद्वान् पैदा न कर सकी । यहाँ तक कि स्वामी विवेकानंद सरीखे विद्वान् भी वेदों के बारे में लोगों को प्रेरित करने के लिए कुछ भी कार्य न कर सके । यदि ऐसा न होता तो आज वेद के इस उद्घोष ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' को सार्थक करने में हम सफल हो गए होते ।

यद्यपि वेद जैसे ग्रन्थ पर कुछ लिखने का अधिकार तो केवल उन लोगों को होना चाहिए जिन्होंने आर्ष पद्धति से पहले वेदों को स्वयं पढा हो । चूंकि आजकल उस पद्धति से पढ़ना भी अत्यन्त दुष्कर तथा दुर्लभ हो गया है इसलिए स्वाध्यायशील विद्वानों के मुख से प्रवचन आदि सुन कर एवम् थोड़ा बहुत अपनी बुद्धि के अनुसार स्वयं स्वाध्याय करके ही काम चलाया जा रहा है ।

श्री धर्मपाल कपूर जी ने शायद इसी प्रकार से जो कुछ ज्ञान वेदों

एवम् वेदांगों के बारे में अर्जित तथा गुण-ग्राही होने के कारण से जो संबंधित ज्ञान इधर-उधर से संकलित कर उस पर अपना चिन्तन-मनन किया, उसे उन्होंने अपने तरीके से लेख-बद्ध कर एक पुस्तक का आकार दिया है। प्रस्तुत पुस्तक को उन्होंने शायद इसी भावना से प्रेरित हो कर लिखा है कि वेद एवम् वैदिक साहित्य संबंधी ज्ञान सरल से सरल शब्दों में उन लोगों तक निःशुल्क पहुँचे, जिन्होंने अपने जीवन में वेदों का कभी दर्शन भी न किया हो ताकि इस पुस्तक को पढ़ने की ओर उनका रूझान बन सके। श्री कपूर जी के इस स्तुत्य प्रयास के लिए मैं उन्हें साधुवाद देता हूँ। उनका इस पुस्तक को लिखना कहाँ तक सार्थक रहा, इस बात का अन्तिम निर्णय तो पाठकवृन्द स्वयं ही करेंगे।

डॉ. रमेश चन्द्र बावा, मंत्री
आर्य समाज सैक्टर 12, पंचकूला
कोठी नं. 500 सैक्टर 8
पंचकूला (हरियाणा)-134109
मो. : 9815009194

विशेष सूचना

1. स्वाध्याय, मनन और आत्मसात् ।
2. पाठकगण पुस्तक पढ़ने के पश्चात् किसी भी स्वाध्यायशील मित्र को इसे देने की कृपा करें ।
3. कोई भी जिज्ञासु अपनी इच्छानुसार इसकी प्रतियाँ फोटोस्टेट करवा कर स्वाध्यायशील मित्रों में प्रचार-प्रसार के लिये बाँट सकता है ।
4. पुस्तक केवल प्रचारार्थ लिखी गई है और सदुपयोग ही इसका मूल्य है ।
5. सर्वाधिकार लेखकाधीन ।

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वेद	1
2.	उपवेद	16
3.	ब्राह्मण	17
4.	आरण्यक	21
5.	उपनिषद्	23
6.	शिल्पसूत्र	29
7.	वेदांग (शास्त्र या अंग)	40
8.	उपांग (दर्शन या शास्त्र)	55

1. वेद-सार

सारी सत्य विद्याओं का इक वेद ही भण्डार है ।
पूर्ण ईश्वर ने दिया नियमों का इसमें सार है ।
पूर्णतया परमात्मा का पूर्ण इसमें ज्ञान है ।
हो परिवर्तन न इसमें ऐसा नित्य विज्ञान है ।
वेद प्रभु के आदेशों का सुन्दर मंगल गान है ।
वेद ही ईश्वर की वाणी वेद विमल विज्ञान है ।
सुख शांति को पाने का केवल यही विधान है ।
वेद के ही ज्ञान से संसार का कल्याण है ।

वेद शब्द की व्युत्पत्ति विद् धातु से हुई है जिसका अर्थ है ज्ञान । इस प्रकार वेद अनुभूत ज्ञान नहीं वरन् अवतरित ज्ञान (Revealed Knowledge) है । यह ज्ञान साधन से नहीं, प्रार्थना से ही प्रार्थी के हृदय में प्रभु के कृपा प्रसाद से अवतरित होता है । ईश्वरीय ज्ञान होने से वेद सम्पूर्ण ज्ञान का कोष है । वैदिक शब्दों का स्वरूप अर्थ आदि में वही था जो प्रलय से पूर्व था और जब-जब सृष्टि हुई तब-तब था और जब-जब सृष्टि होगी, यह रहेगा । वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद । जैसे कि अथर्ववेद में लिखा है—

ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह ।
उच्छिष्टज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः ।। —11.7.24

इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण में भी लिखा है :—

अग्ने ऋग्वेदो वायोर्यजुवेदः सूर्यात्काम वेदः । —99.51.03

प्रथम सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा ऋषियों की आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया ।

प्रस्तुत मंत्र में चारों वेद के नाम एक साथ आये हैं । वे सिद्ध करते हैं कि चारों वेद का ज्ञान एक साथ प्राप्त हुआ है न कि क्रमिक व्यवस्था से । इससे यह ज्ञात होता है कि वेदों का विभाजन महर्षि वेदव्यास ने नहीं किया था अपितु प्रभु द्वारा ही किया गया था । महर्षि

वेद व्यास ने केवल चारों वेदों की शिक्षा अपने चारों शिष्यों पैल, वैशम्पायन, जैमिनी एवं सुमन्तु को दी थी ।

चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश् चत्वारश्चाश्रमाः पृथक् ।
भूतं भव्यं भविष्यं च, सर्वं वेदात् प्रसिद्धयति ।।

–मनुस्मृति 12.97

चारों वर्ण, तीन लोक, चारों आश्रम, भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों काल का सभी ज्ञान वेद से प्राप्त होता है ।

वेद ही प्रभु की कल्याणकारी वाणी है, यह वेद के अनेक अन्तर्साक्ष्य से भी प्रकट है । यह परम पवित्र वेद ज्ञान सृष्टि सर्ग के आरम्भ में–ऋक्, यजु, साम और अथर्व संहिताओं के रूप में मुक्ति से लौटे हुए पवित्रतम आत्माओं–अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों में प्रकाशित हुआ । अतः महर्षि दयानंद भी लिखते हैं–

जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है उससे ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद– ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं । -ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

इसी प्रकार पं० भगवद्दत्त लिखते हैं–

वेद तो सदा से चले आये हैं वस्तुतः पुराणों में भी इसके विपरीत नहीं कहा गया । वहां भी लिखा है कि वेद आरम्भ से ही चतुष्पाद था अर्थात् एक वेद की चार ही संहिताएं थी ।

–वैदिक वाङ्मय का इतिहास (प्रथम भाग पृ० 96)

वेद की भाषा परमात्मा की भाषा है क्योंकि संसार में जितने भी धार्मिक ग्रंथ हैं उनके सृजन के समय से पूर्व भाषा का निर्माण हुआ । ऐसा ही जर्मन के विद्वान् मैक्समूलर ने भी लिखा है :

विश्व के इतिहास में यदि किसी ग्रंथ को प्राचीनतम कहा जा सकता है तो वह वेद है जिसमें मानव मस्तिष्क का सर्वोपरि विकास देखा जा सकता है ।

1. वेदों का महत्व – महाभारत काल के पूर्व वेदों का वास्तविक अर्थ ऋषि मुनियों द्वारा प्रचलित था । इस काल के बाद इनका ह्रास होने लगा । वेद के भाष्य करने वाले अनेक विद्वान् जैसे सायणाचार्य,

महिधर, रावण, उव्वट, महर्षि दयानंद, वेदानंद तीर्थ, सातवलेकर, विद्यानंद ''विदेह'', डॉ० सत्य प्रकाश आदि हुए। परन्तु इन वेदों के विद्वानों में महिर्ष दयानंद सर्वप्रथम विद्वान् थे, जिन्होंने प्रथमबार वेदों का हिंदी में अनुवाद किया और इसी प्रकार डॉ० सत्यप्रकाश ही सर्वप्रथम भारतीय थे जिन्होंने प्रथमबार चारों वेदों का अनुवाद अंग्रेज़ी भाषा में किया।

महर्षि दयानंद से पूर्व किसी ने भी तो वेदों को जन-जन की वस्तु बनाने का लक्ष्य निर्धारित नहीं किया। महर्षि दयानंद ने ''ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक'' शब्दों का प्रयोग किया है। परन्तु वैदिक वाङ्मय के इतिहास में कहीं एक पंक्ति भी ऐसी नहीं मिलती जिससे प्रतीत हो कि ऋषियों की इस लम्बी शृंखला में किसी एक ऋषि ने भी वेदों को विश्व ख्याति तक पहुँचाने का प्रयास किया हो। महर्षि दयानंद से पूर्व वेद या तो स्थूल कर्मकाण्ड का विषय बने रहे या अर्थहीन पाठ तक सीमित रहे। महर्षि दयानंद से पूर्व सभी वैदिक विद्वानों का प्रयास वेदों को सरल से सरलतर बनाने की अपेक्षा कठिन से कठिनतर बनाने की ओर रहा। वेद के अध्ययन के लिये ऐसी शर्तें रखी गई थी कि ''न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी'' की लोकोक्ति चरितार्थ होती चली गई। आज भी यही बात लागू होती है। इसका परिणाम यह हुआ कि वेद की जय का उद्घोष करने वाले व्यक्ति भी वेदों को छूने से घबराते हैं।

वेद दैवी ज्ञान है और सृष्टि के आदि में दैवी भाषा (वैदिक संस्कृत) में ही वेद ज्ञान का प्रकाश हुआ। वेद और इसकी भाषा अपौरुषेय है। इसका ज्ञान जिस भाषा में है वह भाषा मानव निर्मित नहीं है। वह तो प्रकृति की भांति नैसर्गिक है। जैसे स्वामी विद्यानंद सरस्वती लिखते हैं–

वेद ज्ञान की भाषा के द्वारा दिया गया है उस भाषा की उत्पत्ति संसार की किसी भाषा से नहीं हुई। न ही वह किन्हीं दूसरी भाषाओं का अपभ्रंश है।

दूसरी भाषाओं से अपभ्रंश के रूप में नवीन भाषाएँ बन सकती हैं– बनी भी हैं, परन्तु वैदिक भाषा इसका अपवाद है ।

–भूमिका भास्कर (भाग-1 पृष्ठ 143)

अथर्ववेद का वचन है –

देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति । – 10.8.32

अर्थात् परमपिता परमात्मा देव के इस काव्य को देखो जो न कभी मरता है न जीर्ण होता है ।

वेद की विशेषता यह है कि इसके एक-एक मंत्र और एक-एक शब्द के अनेक अर्थ हैं । सूर्य के अनेक नाम वेद में हैं । जैसे–

1. सूर्य – आगे ले जाने वाला, 2. रवि – आदरणीय, 3. भानु–चमक देने वाला, 4. मित्र – दोस्त, 5. सविता – सब को जीवन देने वाला, 6. खग–जगाने वाला, 7. हिरण्यगर्भ– शक्ति का भण्डार, 8. पूषन – पालने वाला आदि । परन्तु प्रसंगानुसार जो नाम जहाँ उपयुक्त लगता है उसका वही अर्थ भी लगता है ।

काव्य को सम्मान और उससे ब्रह्मानंद सरोवर प्राप्त करने के लिए अपेक्षित बुद्धि प्रत्येक व्यक्ति के पास नहीं होती । सृष्टि एवं वेद के रूप में उपलब्ध प्रभु काव्य को परखना प्रत्येक व्यक्ति का काम नहीं है । परन्तु जिस प्रकार साहित्य के पारखी कवि एक-एक शब्द को सुनकर झूम उठते हैं, उसी प्रकार प्रभु काव्य की गहराई में जाकर उसके गंभीर एवं चमत्कारपूर्ण अर्थों को जानने वाला भी आनंदविभोर होकर नाचने लगता है ।

वेद का प्रत्येक अक्षर सभिप्रायी और सहैतुक होता है अर्थात् उसका कुछ अभिप्राय एवं उसके प्रयोग में कुछ हेतु निहित होता है । वेदमंत्र में कोई भी ऐसा शब्द नहीं है, जो अनावश्यक एवं निरर्थक हो उसमें छंदपूर्ति, पुनरुक्ति प्रत्येक कल्पवृक्ष तथा उसका प्रत्येक वाक्य कामधेनु के समान सभी के लिए उनकी वैदिक चेतना के अनुसार अर्थ को प्रकाशित कर देता है ।

वेद की शिक्षायें किसी भी देश विशेष अथवा वर्ग विशेष के लिए

नहीं है। अपितु, देशों, सभी समाजों और सभी वर्गों के लिये समान हैं। वेद की शिक्षायें सार्वभौम हैं। अतः चारों वेदों में कहीं भी किसी विशेष देश, समाज अथवा वर्ग का नामोल्लेख भी नहीं मिलता है। वेद का अन्य धर्मग्रन्थों से तुलनात्मक अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि जो इन ग्रंथों में सत्यम् शिवम् सुंदरम् है वह सब वेदों का ही है और जो इसके भिन्न हैं वह झूठ व भ्रांति है। इसी कारण विभिन्न ग्रंथों में वेदों की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है। जैसे–

1. वेदोऽखिलो धर्ममूलम् –मनुस्मृति 2.6

वेद धर्म के मूल हैं। वही धर्म के विषय में स्वतः प्रमाण है।

2. न वेद शास्त्रदन्यतु किंचिच्छास्त्र हि विद्यते।
निस्सृतं सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रत्सनातनात्।।

–याज्ञवल्क्यस्मृति

वेद शास्त्र से बढ़कर कोई शास्त्र नहीं है। अन्य सब सत्य शास्त्र सनातन नित्य वेद से ही निकले हैं।

3. निजशकत्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम् –सांख्य दर्शन 5.51

4. न ह्येषु प्रत्य श्रमस्त्य नृषेरतपसो वा पायेवर्य वित्सु तु खलु वेदितृषु भूयो विद्यः प्रशस्यो भवतीत्युक्तं पुरस्तात्। –निरुक्त 12.13

वेद का ज्ञान तपस्या द्वारा ऋतम्भरा प्रज्ञा को प्राप्त करके ऋषित्व स्थिति में पहुंचकर ही प्राप्त किया जा सकता है। जिन में ऋतम्भरा प्रज्ञा नहीं है जो व्यक्तियों में तपस्वी नहीं हैं। गुढार्थ में प्रवेश करने की जिन व्यक्तियों में योग्यता नहीं है। वे वेदार्थ को समझने में असमर्थ ही रहते हैं। अतः तैत्तिरीय ब्राह्मण में लिखा है–

अनन्ता वै वेदाः तैत्तिरीय ब्राह्मण –3.10.11.4

वेद अनन्त हैं।

प्रभु की स्वभाविक शक्ति से प्रकट होने के कारण वेद स्वतः प्रमाण हैं।

5. ओंकार वेद निरमाए। –श्रीगुरुग्रंथसाहिब

ईश्वर ने वेद बनाए।

–(राग राम कली मुहल्ला 1 ओकार शब्द 1)

इस प्रकार सारे धर्म ग्रंथ एक स्वर से वेदों की नित्यता एवं स्वतः प्रमाणता का प्रतिपादन करते हैं। इसी प्रकार सुप्रसिद्ध पारसी विद्वान् फर्दून दादानचान ने अपनी पुस्तक **"Philosophy of Zoroastrianism and comparative study of Religions"** में लिखा है।

The Veda is a book of knowledge and wisdom, comprising the book of nature, the book of religion, the book of prayers, the book of morals and so on. The word Veda means wit, wisdom, knowledge and truly the Veda is condensed with wisdom and knowledge. —P. 100

वेद ज्ञान की पुस्तक है, जिसमें प्रकृति, धर्म, प्रार्थना, सदाचार आदि विषयक बातें सम्मिलित हैं। वेद का अर्थ ज्ञान है। वास्तव में वेद में सारे ज्ञान-विज्ञान का तत्व भरा हुआ है।

2. वेद ही हमारे जीवन को उच्च कर सकते हैं। योरूप के सारे दर्शन और विद्वान् इसके सामने तुच्छ हैं। इसलिये वेदों की ओर जाओ।—एमर्सन

3. वैदिक धर्म अत्यंत प्राचीन धर्म है और संसार के धर्मों की श्रेणी में प्रथम भाग और स्थान उसी का है। मैं चाहता हूं कि उसके मनोहर, मनोरंजक उपदेशों और विचारों का संक्षेप तैयार करूं, ताकि उसे सुगमता से पढ़ और समझ सकें। —टॉलस्टाय

4. वेद समस्त ज्ञान का भण्डार है—सम्पूर्ण विद्याओं का आदि मूल है। -स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (भूमिका भास्कर, पृ० 65)

अमेरिका में Hymns from the Rigveda और Secrets of Vedas नामक पुस्तकों के लेखकों ने वेद को मानव की सवर्तोन्मुखी उन्नति करने वाले ग्रंथ कहा है। अन्ततः व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान केवल वेदानुकूल आचरण से ही हो सकता है।

वेद की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए डॉ० श्री योगेश्वर प्रसाद सिंह लिखते हैं—

वेद-महिमा

वेद मूल है सब धर्मों का, अखिल विश्व की थाती,
इसके पृष्ठों पर संस्कृति की गरिमा है लहराती ।
पहला महाकाव्य संस्कृत का, धरती पर प्राचीन,
शब्द-शब्द में भाव भरे हैं, अनुपम और नवीन,
ज्ञान-किरण अक्षर-अक्षर में, मोहक लौ फैलाती ।। 1 ।।
सृष्टि-चक्र के साथ वेद का है अटूट संबंध,
काट रहा युग-युग से भवरोगों का दारुण बन्ध,
वेद मंत्र पढ़ बार-बार रसना है नहीं अघाती ।। 2 ।।
जिसने इसको जान लिया, फिर उसको क्या हे शेष ?
वेद बनाता है इस धरती का पावन परिवेश,
भारत क्या यह सारी दुनियाँ इसको शीश झुकाती ।। 3 ।।
अपौरुषेय रही जो रचना, गरिम से भरपूर,
मानवता के पथ की बाधाओं को करती दूर,
जहाँ विद्वता ज्ञान-दक्षता सुख से आदर पाती ।। 4 ।।
वेद वृक्ष की शाखाएं हैं ब्राह्मण औ आरण्यक,
उपनिषदें जिसके मंत्रों की व्याख्या करती सम्यक्,
ज्ञान-दीप की जलती रहती जहाँ हमेशा बाती ।। 5 ।।
अमर ज्योति फैलाने वाला है यह वेद महान्,
ऋषि-मुनि, देव और भूपों का शिक्षाप्रद आख्यान,
नारी का सम्मान जहाँ ऋषिकाएँ खूब बढ़ाती ।। 6 ।।
वन्दनीय यह वेद ज्ञेय है जन-जन का यह धन है
मुझको लगता, सारी वसुधा का ही यह दर्पण है,
मौन आज विज्ञान, वेद की महिमा कही न जाती ।। 7 ।।

2. वेदों के महत्व के कारण :–

एकेश्वरवाद – वेद में एकेश्वरवाद का प्रतिपादन हुआ है। जैसे–

ओम् इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गुरुत्मान् ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ।।

—ऋग्वेद 1.164.46, अथर्ववेद 9.10.28

परमात्मा एक है परन्तु ज्ञानी लोग उसके गुण, कर्म और स्वभाव के कारण एवं अपने-अपने अनुभवों के अनुसार उसे विभिन्न नामों से पुकारते हैं । जैसे--ऐश्वर्यशाली होने से वह इन्द्र है, मृत्यु से त्राता होने से वह मित्र है, पाप निवारक होने से वह वरुण है, प्रकाशक होने से वह अग्नि है । अतः वेद मंत्रों में अनेकों नामों से पुकारा जाता हुआ भी वह एक है । मंत्रों में दिव्य सुपर्ण (शोभन पतन वाला) या गुरुत्मान (गुरु आत्मा) अग्नि, यम, नियन्ता परमात्मा की स्तुति की गई है । गुरुदत्त विद्यार्थी लिखते हैं—

Vedas, the sacred books of the primitive aryans, are the record of the highest form of monotheism possible to purist conscience.

—Works of Pandit Gurudutt Vidyarthi P. 43

वेद प्राचीन आर्यों के पवित्र ग्रंथ हैं । ये एकेश्वरवाद के शुद्धतम लेख की सर्वोच्च शाखाएँ हैं जोकि हमारे अंतःकरण के अनुसार हैं । जैसे ऋग्वेद में भी लिखा है—

विश्वस्यमिषतो वशी —ऋग्वेद 10.190.2

सारा संसार उस एक ही परमपिता के वश में है ।

बाइबल में भी लिखा है—

सृष्टि के आदि में प्रभु का शब्द था । सारे विश्व की एक ही भाषा थी, एक ही वाणी का सर्वत्र व्यवहार था ।

इसी प्रकार कुरान में भी लिखा है—

पहले तो सब लोगों का एक ही मजहब था ।

2. ज्ञान, कर्म और उपासना का समन्वय—

वेदों में कर्म, ज्ञान और उपासना (भक्ति) का सुन्दर समन्वय हुआ है क्योंकि केवल ज्ञान, केवल कर्म और केवल भक्ति से मुक्ति नहीं मिल सकती ।

(क) अपितु इन तीनों के समुच्चय से ही प्रभु की अनुभूति हो सकती है। यही वैदिक धर्म की शिक्षा है। अतः श्रद्धा एवं मेधा के सुन्दर समन्वय की शिक्षा वैदिक धर्म ही सिखाता है।

(ख) **मध्य मार्ग एवं समन्वय** – वेदों में मध्यमार्ग का प्रतिपादन और उनके समन्वयात्मक उपदेश हैं। संसार में प्रायः देखा जाता है कि व्यक्ति मध्य मार्ग का अवलम्बन न करके किसी न किसी पराकाष्ठा पर तुल जाते हैं। जैसे–कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो केवल व्यक्तिगत उन्नति से ही संतुष्ट रहते हैं और सामाजिक उन्नति की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देते। दूसरे कई ऐसे व्यक्ति हैं जो पर्याप्त रूप से अपनी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक शक्तियों को विकसित करने का प्रयत्न न करके केवल दूसरों की उन्नति के विचार से ही तत्पर रहते हैं। वास्तव में, देखा जाये तो ये दोनों ही आवश्यक हैं। परन्तु वेदों की शिक्षा भोग व समन्वय की है। जैसे–

ओ३म् ईशा वास्यामिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

–यजुर्वेद 40.1

जो कुछ इस गतिशील जगत् में दिखाई दे रहा है। प्रभु उसके कण-कण में विद्यमान है। अतः जो भी किसी के पास है वह त्यागमय भाव से भोगे क्योंकि यह धन किसी का भी नहीं है।

वेद की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए पंडित श्रीराम शर्मा लिखते हैं–

वेद परम पिता परमेश्वर की अमर वाणी है। वेदों के द्वारा हमको सांसारिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार का श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त होता है। वेदों का स्वाध्याय पापों से दूर रखकर हमारे जीवन में आशा एवं उल्लास की वृद्धि करता है। वेद-ज्ञान जीवन को शांत एवं पवित्र बनाकर कुपथ से सुपथ की ओर ले जाता है। यह व्याकुल एवं भ्रमित मन को सचेत करके उचित मार्ग दर्शन भी देता है।

अतः वेद माँ है, जो मानव को देवता बना देता है। यह धर्म का

मूल एवं जीने की कला है। वेद श्रीराम की मर्यादा एवं श्रीकृष्ण की गीता है। यह महर्षि पतंजलि का योग एवं महर्षि दयानन्द का परम धर्म है। वेद, विप्रों का भूषण, ज्ञानियों का प्रयाग और ज्ञान-कर्म-उपासना का संगम है।

3. तर्क एवं विज्ञान – वेदों में धर्म और विज्ञान का मूल है। इस बात को महर्षि दयानंद जी ने अपने वेदभाष्यों में दिखाया है।

श्री पावगी अपनी पुस्तक Vedic India में लिखते हैं।

The Veda is the fountain head of knowledge, the prime source of inspiration, may be the grand repository of Pirthy passages of Divine Wisdom and even eternal truths.

वेद सम्पूर्ण ज्ञान के आदि स्रोत, ईश्वरीय ज्ञान का प्रधान आधार, इतना ही नहीं अपितु दिव्य बुद्धि और नित्य सत्यमय वाक्यों के महान् भण्डार हैं।

4. सार्वभौम निष्पक्ष शिक्षा – वेदों की शिक्षा में सार्वभौमिकता, ओजस्विता, नित्यता, सरलता व सत्यता है। जैसे–

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। –यजु. 36.18

इस संसार के प्रत्येक प्राणी को मित्र की दृष्टि से देखें।

वस्तुतः अवैज्ञानिक और दूषित शिक्षा प्रणाली के कारण ही वेद कठिन प्रतीत होते हैं। पहले तो वैदिक भाषा ही संसार में प्रचलित सारी भाषाओं में सबसे अधिक सुबोध्य व सरलतम भाषा है। वेद-अवतरण से युगों बाद वैयाकरण का निर्माण हुआ है। वेद व्याकरण से पहले हैं। पहले देववाणी में वेदवाणी का अध्ययन हुआ और संस्कृत व्याकरण व वेद व्याकरण युगों के उपरांत संकलित किये गये।

5. कर्त्तव्य का प्रतिपादन – वेदों में मानव के सभी प्रकार के कर्त्तव्य, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय कर्त्तव्यों का विशद विवेचन किया गया है। जैसे–

अंग्रेज़ी विद्वान् W.D. Brown ने अपनी पुस्तक Superiority

of the Vedic Religion में लिखा है ।

It (Vedic religion) recognises but one God. It is a thoroughly scientific religion where religion and science meet hand in hand. Here theology is based upon science and philosophy.

वैदिक धर्म केवल एक ही प्रभु का प्रतिपादन करता है । यह एक पूर्णतः वैज्ञानिक धर्म है, जहाँ धर्म एवं विज्ञान हाथ से हाथ मिलाकर चलते हैं । यह धार्मिक सिद्धान्त विज्ञान एवं तत्वज्ञान और दर्शन पर आश्रित है । अतः महर्षि दयानंद कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अनुशीलन के उपरांत मैक्समूलर ने लिखा था–

मेरा यह निश्चित् मत है कि संसार के मनुष्य मात्र के स्वाध्याय के लिए वेद के अतिरिक्त अन्य कोई आवश्यक ग्रंथ नहीं है । मेरा विचार है कि आत्मज्ञान की प्राप्ति की इच्छा रखने वाले तथा अपने पूर्वजों, इतिहास और मस्तिष्क की उत्पत्ति के लिए सचेत, प्रत्येक व्यक्ति के लिए वेद का स्वाध्याय नितांत आवश्यक है ।

3. वेदसार – चारों वेदों में 20,416 मंत्र हैं इनका संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है :

1. ऋग्वेद – इसमें 10 मंडल, 1028 सूक्त, 10,589 मंत्र, 209 देवता और 354 ऋषि हैं । इसके अतिरिक्त सर्वानुक्रमणी नामक ग्रंथ के अनुसार इसकी शब्द संख्या 153826 और अक्षर संख्या 432000 है । इसके ऋषि का नाम अग्नि है । इसमें विज्ञान और पदार्थों के गुण और धर्मों का वर्णन है । यह देवों की स्तुतियों से भरपूर है । इसके अतिरिक्त सृष्टिरहस्य, नक्षत्र, अर्थशास्त्र, पशुपालन, परिवार का सुख, मृत्यु को जीतना, एक ईश्वरवाद, आशावाद आदि विद्याओं का उल्लेख है । इसमें 74 बार धर्म शब्द का प्रयोग हुआ । इसके 8 मण्डलों को छोड़कर अन्य मण्डलों का आरम्भ अग्नि से हुआ है । अग्नि सूक्त में 45 प्रकार की अग्नियों का उल्लेख है । इसलिये प्रोफेसर मैक्समूलर ने सत्य ही लिखा है–

The texts of the Vedas have been handed down to us with such accuracy that there is hardly a various reading in the proper sense of the word or even an uncertain accent in the words of the Rigveda.

वेद संहिताएँ हमें ऐसी शुद्धरीति से प्राप्त हुई हैं कि इनमें कहीं भी पाठभेद नहीं मिलता। सम्पूर्ण ऋग्वेद में एक भी अक्षर का भेद नहीं मिलता।

2. यजुर्वेद – इसमें 1975 मंत्र और 40 अध्याय हैं। प्रथम 39 अध्यायों में यज्ञ का वर्णन है। ऋषि का नाम वायु है। यज्ञ में समिधा चयन, मार्जन, भूमि, सर्वमेधयज्ञ, शुद्धि, अन्त्येष्टि संस्कार, प्रार्थना मंत्र आते हैं। यज्ञों के अतिरिक्त अन्य विद्यायें जैसे सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, भूगोल, खगोल, अग्नि, जल, वायु, विद्या, अंकगणित, बीजगणित, औषधि, वैद्यक, ज्योतिष, युद्धविद्या आदि भी हैं। परन्तु 40वें अध्याय में केवल आध्यात्मिक विद्या का वर्णन है। इसमें 700 मंत्र ऋग्वेद के हैं।

3. सामवेद – इसमें 27 अध्याय, 87 साम और 1875 मंत्र हैं। इसके तीन भाग हैं–पूर्वार्चिक के 640 मंत्र, महानाम्नी के 10 मंत्र और उत्तरार्चिक के 1225 मंत्र हैं। इसके ऋषि का नाम आदित्य है। साम का अर्थ है – समन्वय। यह भारत के समन्वयवाद का प्रतीक है। समन्वय में संगीत, माधुर्य, आनंद है। उपासना, जगत्, जीव और जगत् नियंता का, इसमें विश्वसंगीत भी है। इससे ज्ञान व आनंद की प्रगति होती है। इसके मंत्र अध्वर्यु (यज्ञ का एक ऋत्विक) पढ़कर यज्ञकर्म कराता है। ये एक साथ मिलकर ही पढ़े जाते हैं। सामवेद के 1875 मंत्रों में से 1590 मंत्र ऋग्वेद के हैं अन्य वेदों में भी इससे भिन्न सामवेदस्थ मंत्रों में ऐसे भी अनेक मंत्र हैं जोकि सामवेद के अतिरिक्त यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में भी मिलते हैं। यहाँ तक कि ऋग्वेद में 9 मण्डल के 4 मंत्र सामवेद में तीन-तीन बार विभिन्न स्थानों में पाये जाते हैं। जैसे–

ऋग्वेद मंत्र	सामवेद मंत्र
9-61-13	487, 762, 1335
9-66-19	627, 1464, 1518
9-98-7	552, 1329, 1681
9-101-13	553, 774, 136

सामवेद के मंत्रों को नाना स्वर भेद से अनेकों प्रकार से गाया जा सकता है । वस्तुतः इस वेद के प्रत्येक मंत्र में प्रभु प्रेम की विद्युत् तरंग प्रवाहित हो रही है; प्रत्येक सामगान में परमात्मा के आनंदरूपी वीणा की झंकार झंकृत होती दृष्टिगोचर हो रही है, जिस को सहृदय रसिक भक्त ही अनुभव कर सकते हैं न कि मोह माया में फंसे हुये लोग ।

सामवेदश्च वेदानाम् —अनुशासन पर्व 14.317

वेदों में मैं सामवेद हूँ ।

इसी प्रकार श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं—

वेदानां सामवेदोऽस्मि । —10.22

वेदों में मैं सामवेद हूँ ।

अब प्रश्न उठता है कि सामवेद सबसे छोटा वेद है फिर भी वेदों में इसको सर्वोच्च स्थान क्यों दिया है । इसका कारण यह है कि अन्य वेदों में केवल मंत्र हैं । सामवेद में मंत्र तो हैं परन्तु साथ ही उन्हीं मंत्रों को गानपरक गाया गया है । सामवेद छोटा होने पर भी सबका सार रूप है । जैसे चतुर माली उत्तमोत्तम पुष्पों को लेकर एक सुन्दर गुलदस्ता बना देता है, उसी प्रकार सारे वेदों के चुनिंदा अंश इसमें एकत्रित किये गये हैं । आदिम कालीन यज्ञों में भगवान् की जो सर्वश्रेष्ठ भावपूर्ण मधुर एवं संगीतमय स्तुतियां की गई हैं । उन्हीं को चुनकर प्रस्तुत वेद में प्रस्तुत किया गया है । उपासना-वेद होने के कारण सामवेद तापत्रय से संतप्त व्यक्तियों को अगाध शांति प्रदान करता है । आधि-व्याधि एवं वासनाओं से विक्षुब्ध व्यक्ति इसके मंत्रोच्चारण करते हुए भक्तिवश आनंदसागर में डूब जाता है । इसके मंत्र अमूल्य रत्नों की खान है । उनमें कोई जितना गहरा उतरेगा जितना परिश्रम करेगा,

उतने ही ज्ञान रूपी अमूल्य रत्नों को पायेगा ।

4. अथर्ववेद – इसमें 20 कांड, 731 सूक्त और 5977 मंत्र हैं इसका 20वां कांड और 1200 मंत्र भी ऋग्वेद के हैं । इसके ऋषि का नाम अंगिरा है । एक ही मंत्र के विषय में अनेक पदार्थों का विज्ञान है । यह वेद गृह कांड है । इसमें जन्म, विवाह, संस्कार, मृत्यु, औषधि, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, अध्यात्मविद्या, कृषि, गणित, पृथिवी सूक्त, चिकित्सा, अंत्येष्टि महायज्ञ का वर्णन है । इसके 19 कांड में 27 नक्षत्रों का वर्णन है । पहले मंत्र का ऋषि अथर्व है । इसे ब्रह्म के नाम से भी पुकारा जाता है । क्योंकि यह ब्रह्मवादियों को मोक्ष देता है । अतः इसको ब्रह्मवेद और छन्दोवेद भी कहा जाता है ।

इस प्रकार ऋग्वेद की 21, यजुर्वेद की 101, सामवेद की 1000 अथर्ववेद की 9 शाखाएं हैं । इस प्रकार चारों वेदों की 1131 शाखायें हैं । परन्तु इनमें से अधिकतर अप्राप्य हैं ।

अतः वेद प्रभु की दिव्य वाणी है । वेद से बढ़कर संसार में कोई ग्रंथ नहीं है । क्योंकि ये स्वतः प्रमाण हैं । संसार के पुस्तकालय में वेद प्राचीनतम, सरलतम और सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ हैं । अतः विद्वानों ने ऋग्वेद को ज्ञान, यजुर्वेद को कर्म, सामवेद को उपासना और अथर्ववेद को अध्यात्म का विवेचन करने वाला माना है । परन्तु स्वयं वेदों में स्थान-स्थान पर यही घोषणा की गई है कि चारों वेद और उनका ज्ञान एक ही है । वस्तुतः वेदों का वास्तविक आदर्श आत्मवत् सर्वभूतेषु अर्थात् सब प्राणियों को अपनी आत्मा के समान समझो या वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् सारा संसार एक परिवार है । ऐसा समझो । महर्षि दयानंद लिखते हैं–

याज्ञवल्क्य महाविद्वान् जो महर्षि हुए हैं, वह अपनी पण्डिता मैत्रेयी स्त्री को उपदेश करते हैं कि हे मैत्रेयी ! जो आकाशादि से भी बड़ा सर्वव्यापक परमेश्वर है, उससे ही ऋक्, यजु, साम और अथर्व ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं । जैसे मनुष्य के शरीर से श्वास बाहर को आके फिर भीतर को आती है इसी प्रकार सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता

है और प्रलय में संसार में वेद नहीं रहते, परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे सदा बने रहते हैं, बीजाङ्कुरवत। जैसे बीज में अंकुर प्रथम ही रहता है, वही वृक्ष रूप होके फिर भी बीज के भीतर रहता है, इसी प्रकार से वेद भी ईश्वर के ज्ञान में सब दिन बने रहते हैं, उनका नाश कभी नहीं होता क्योंकि वह ईश्वर की विद्या है इससे इसको नित्य ही जानना।—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (अथवेदोत्पत्तिविषयः)

इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद ने भी लिखा है—

वेदों के द्वारा ही हम अपने धर्म का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। वेदों के अतिरिक्त सब ग्रंथ बदलने वाले हैं।

अतः इन सारे प्रमाणों के आधार पर यदि हम महर्षि दयानंद के इस कथन पर विचार करें कि ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान ये चार वेदों के मुख्य प्रतिपाद्य विषय हैं और इनमें प्रभु ही प्रधान विषय है तो हम यह देखते हैं कि उन्होंने वेदों व वैदिक वाङ्मय की सदियों से टूटी शृंखला को जोड़कर ऋषियों द्वारा गूंथी गई, इस वैदिक माला के सौन्दर्य को पुनः लौटा दिया। इससे वेदों के संबंध में सारी भ्रांत धारणाओं का निवारण होकर उनका सुस्पष्ट पुनः मुखरित हो गया।

वस्तुतः ऋषि दयानंद ने आजीवन किसी की नौकरी न की। वह ऋषि ईश्वर का प्यारा था। उसने श्रद्धा से भरपूर हृदय के साथ अपने प्यारे प्रभु की अमर वेदवाणी का सही अर्थ करके मानव का उपकार किया। उसके वेदभाष्य की यह विशेषता है कि उसने परमात्मा के दिशा निर्देश में यह कार्य सम्पन्न किया। इस कार्य में उसका मार्ग दर्शक केवल परमात्मा ही था न कि कोई व्यक्ति।

अन्ततः इतना ही कहना काफी होगा कि वेद ही मानवता के आदि धार्मिक ग्रंथ हैं। यहाँ तक कि संसार के विभिन्न विद्वानों एवं गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड ने भी इन्हें संसार के प्राचीनत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ घोषित किया है। संसार में वेदमंत्रों से बढ़कर कोई वस्तु पावन नहीं और यज्ञ से बढ़कर कोई पावन दृश्य नहीं। वेद की ऋचाएं सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सुन्दरतम् हैं। इनकी वाणी ईश्वरीय, दिव्य एवं कल्याणकारी है।

जागो, उठो, समझो, समझाओ वेद का संदेश जन-जन तक पहुँचाओ, क्योंकि संसार को आज वैदिक धर्म की परमावश्यकता है ।

एक हिन्दी कवि के शब्दों में :--

पूर्ण वह परमात्मा सत्य ज्ञान का भण्डार है ।
पूर्ण वेदों में किया सत्य धर्म का विस्तार है ।।
जैसे दो और दो के मिलने से बनता चार है ।
इस तरह वैदिक धर्म का सत्य ही आधार है ।।

2. उपवेद

चारों वेदों के पृथक्-पृथक् उपवेद हैं । उपवेद नाम किसी एक ग्रंथ विशेष का नहीं है, परन्तु एक-एक उपवेद में अनेक ग्रंथ समझे जाते हैं । इनमें से अनेक ग्रंथों के आजकल नाम तो सुने जाते हैं, परन्तु उनकी उपलब्धि नहीं है ।

महर्षि दयानन्द अपनी पुस्तक आर्योद्देश्यरत्नमाला में उपवेद की परिभाषा करते हुये लिखते हैं—

जो आयुर्वेद वैद्यकशास्त्र, जो धनुर्वेद शस्त्रास्त्र विद्या, राजधर्म जो गांधर्ववेद, गानशास्त्र और अर्थवेद जो शिल्पशास्त्र हैं, इन चारों को उपवेद कहते हैं । —पृष्ठ 97

अतः उपवेदों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया जाता है—

1. ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है । इनमें चरकशास्त्र एवं महर्षि धन्वन्तरि कृत सुश्रुत और निघण्टु ग्रंथ अत्यंत प्रसिद्ध है । ये ऋषिकृत होने के कारण आर्ष ग्रंथ है; आयुर्वेद को वैद्यकशास्त्र के नाम से भी पुकारा जाता है क्योंकि इसमें बतलाया गया है कि व्यक्ति की आयु कैसे दीर्घ हो और स्वास्थ्य की रक्षा कैसे हो? अतः इनको अर्थ, क्रिया, शास्त्र, भेदन छेदन, लेप, चिकित्सा, निदान औषध, वस्तु काल देश

आदि के गुण ज्ञान पूर्वक अध्ययन करना चाहिए ।

2. यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है। वस्तुतः धनुर्वेद संबंधी ग्रंथ प्रायः अप्राप्य हैं । अन्य ग्रंथों में विश्वामित्र अंगिरा आदि ऋषि प्रणीत ग्रंथों के नाम आते हैं । इसमें राजविद्या अस्त्रशस्त्रों की विद्या दिव्य अस्त्रों को मंत्र शक्ति के द्वारा प्रयोग करने की विधि का उल्लेख है ।

3. सामवेद का उपवेद गांधर्ववेद है; इसमें नारद संहिता आदि आर्ष ग्रंथों का वर्णन है; इसमें संगीत का भी सुन्दर वर्णन है ।

4. अथर्ववेद का उपवेद अर्थवेद। इसमें सब प्रकार की शिल्प-विद्या, कला-कौशल, यंत्र निर्माण आदि पदार्थ विद्याओं का उल्लेख है । वर्तमान काल में भारद्वाज ऋषिकृत बृहद् विमानशास्त्र की उपलब्धि हो गई है ।

3. ब्राह्मण

वेदों के वैज्ञानिक वैयक्तिक, सामाजिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक अर्थों को स्पष्ट करने के लिये ब्रह्मा आदि ऋषियों ने ब्राह्मण ग्रंथों का सृजन किया था । यह कार्य बहुत समय तक होता रहा । इनमें वेद मंत्रों की प्रतीकों को लेकर बड़ा वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है । इनके अनुशीलन से मंत्रों के अर्थ पर बड़ा उत्तम प्रकाश पड़ता है । इनमें ऋषियों के सम्वाद, प्रवचन एवं कथा रूप में वर्णन किया गया है । इनमें सृष्टि-सृजन, प्रलय, यज्ञों का विशद् विवेचन गृहस्थों द्वारा किये जाने योग्य सारे धार्मिक कर्मों का उल्लेख किया गया है ।

अनुपलब्ध ब्राह्मण ग्रंथों के विषय में पं० भगवद्दत लिखते हैं–

आज उस वैदिक वाङ्मय की दीन दशा है । इसके कितने ग्रंथरत्न नष्ट हो गए हैं । कुछ मुसलमानों के अत्याचार ने, कुछ काल-क्रम ने कुछ आधुनिक

आर्यों के प्रसाद ने, कुछ ब्राह्मणों के अनार्ष ग्रंथाभ्यास ने, इन सबने मिलकर हमारे सहस्रों ग्रंथों का लोप कर दिया है। किसी काल में ब्राह्मण ग्रंथों की संख्या सैंकड़ों तक पहुँचती थी।

—वैदिक वाङ्मय का इतिहास
(तृतीय भाग पृ० 31)

प्राप्य उपलब्ध ब्राह्मण वाङ्मय का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है—

ऋग्वेदीय ब्राह्मण

1. ऐतरेय ब्राह्मण :— इसमें आठ पंचिकाएं हैं। प्रत्येक पंचिका में 5 अध्याय हैं। इस प्रकार इसमें 40 अध्याय हैं। इसके लेखक का नाम महीदास ऐतरेय था। इसमें 647 ऋग्वैदिक ऋचाओं के उद्धरण दिये गये हैं इनमें से 119 की आवृति की गई है। इसका वर्तमान प्रवचन शौनक का है; ऐतरेय प्रोक्त ब्राह्मण का शौनक ने पुनः परिष्कार किया और कदाचित् इसीलिए इनमें उत्तरवर्ती सामग्री भी जोड़ दी गई है। यह अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा कुछ अधिक पुराना है। इसके विषय में कीथ लिखता है—

The Aitaraya has no allusion to Svetaketu or the more famous Aruni and therefore, we have another suggestion in favour of its composatively older date.

ऐतरेय में श्वेतकेतु अथवा अरुणि का उल्लेख नहीं है। अतः ऐतरेय के कुछ अधिक पुराना होने में यह एक और हेतु हो सकता है।

नई खोज के अनुसार उद्दालक अरुणि ऐतरेय ब्राह्मण से उद्धृत हैं। अतः एक ऐतरेय ब्राह्मण के कुछ अधिक पुराना होने में कीथ का अनुमान प्रमाण कोटि में नहीं आ सकता है।

2. कौषीतकि ब्राह्मण :— इसमें 30 अध्याय हैं। इसमें पुनर्मृत्यु शब्द मिलता है। यह शब्द ब्राह्मण काल के पुनर्जन्म के सिद्धान्त का स्पष्ट द्योतक है।

3. शाङ्खायन ब्राह्मण :—इसमें भी 30 अध्याय हैं।

शुक्ल यजुर्वेदीय ब्राह्मण

4. माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण :– शतपथ ब्राह्मण में 14 काण्ड एवं 100 अध्याय हैं। इसको वाजसनेय ब्राह्मण के नाम से भी पुकारा जाता है जो व्यक्ति इसका अध्ययन कर लेता है वह याज्ञिक क्रिया का सर्वश्रेष्ठ पंडित कहलाता है। इसमें वेदार्थ की कुंजी है। वस्तुतः याज्ञवल्क्य कृत यह ग्रंथ अनुपम एवं अनूठा है। इसका पुनः संस्कार एवं प्रवचन याज्ञवल्क्य ने ही किया था। इसमें अनेक ऋषियों, पुराने राजाओं, भारतीय साम्राज्यों का भी वर्णन है। सारे ग्रंथों के कर्ता के रूप में याज्ञवल्क्य का नाम केवल 14वें काण्ड के अंत में ही आता है। 11वें से 14वें काण्ड की विषय वस्तु पूर्वकाण्डों की परिशिष्ट रूप है। परिशिष्ट रूप होने के अतिरिक्त इन काण्डों में कुछ ऐसे रोचक विषयों का भी वर्णन किया गया है जो ब्राह्मणों में भी नहीं मिलते हैं।

5. काण्व शतपथ ब्राह्मण :–कावेण्ड के अनुसार इसमें 104 अध्याय, 446 ब्राह्मण और 5865 कण्डिकाएं हैं। सारे ग्रंथ में 17 काण्ड हैं।

6. कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय ब्राह्मण :–इसमें 3 अष्टक हैं। पहले अष्टक को पारक्षुद्र, दूसरे को अग्निहोत्र और तीसरे के विभिन्न भागों को अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। तैत्तिरीय ब्राह्मण तैत्तिरीय संहिता का परिशिष्ट मात्र है; सारे ब्राह्मण में यम व नाचिकेता की कथा का सूक्ष्म रूप मिलता है।

सामवेदीय ब्राह्मण

7. ताण्डय ब्राह्मण :–छान्दोग्योपनिषद् इसकी ही उपनिषद् है। पहले इस उपनिषद् को ताण्ड्य-रहस्य ब्राह्मण के नाम से पुकारा जाता था। इसमें 25 प्रपाठक एवं 347 खण्ड हैं। इसमें अनेक मंत्रद्रष्टा एवं यज्ञ-क्रिया-द्रष्टा के ऋषियों के नाम आते हैं।

8. षड्विश ब्राह्मण :–इसमें 5 प्रपाठक हैं। प्रपाठकों का विभाग खण्डों में है पहले प्रपाठक में 7, दूसरे में 10, तीसरे में 12, चौथे में 7 और पांचवें में 12 खण्ड हैं। इस प्रकार कुल इसमें 48 खण्ड हैं।

9. मंत्र ब्राह्मण (छान्दोग्य ब्राह्मण) :–इसमें 2 प्रपाठक हैं । प्रत्येक प्रपाठक में आठ-आठ खण्ड हैं । इसमें विभिन्न वेदों से उद्धृत मंत्रों का संग्रह हैं और कुछ मंत्र अन्य ब्राह्मणों से उद्धृत किये गये हैं । सत्यव्रत सामश्रयी आदि पंडितों का विचार है ये सब मिलाकर कभी 40 प्रपाठकों का ही एक ताण्ड्य अथवा छान्दोग्य ब्राह्मण था ।

10. दैवत अथवा देवताध्याय ब्राह्मण :–इसमें 3 खण्ड हैं । पहले खण्ड में 26, दूसरे में 11 और तीसरे में 25 कण्डिकाएं हैं । कुल 62 कण्डिकाएं हैं ।

11. आर्षेय ब्राह्मण :–इस ब्राह्मण में तीन प्रपाठक हैं । पहले प्रपाठक में 28 खण्ड, दूसरे में 25 और तीसरे में 29 खण्ड हैं । सारे ब्राह्मण में 82 खण्ड हैं । यह सारा ब्राह्मण सामों की आर्षानुक्रमणी समझना चाहिए ।

12. सामविधान ब्राह्मण :–इसमें तीन प्रपाठक एवं 25 खण्ड हैं पहले प्रपाठक में 8, दूसरे प्रपाठक में 8 और तीसरे में 9 खण्ड हैं ।

13. संहितोपनिषद् ब्राह्मण :–इसमें 1 प्रपाठक एवं 5 खण्ड हैं । इसमें सामवेद के अरण्यगान एवं ग्रामगेय गान का नाम लिया गया है ।

14. वंश ब्राह्मण :–इसमें 3 खण्ड है । इसमें सामवेद के आचार्यों की वंश परम्परा ही दी गई है; जैसे वंश शतपथ एवं जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण में मिलते हैं, लगभग उसी प्रकार के वंश इस में हैं ।

15. जैमिनीय ब्राह्मण :–इसमें मुख्य 3 भाग हैं और 1182 खण्ड हैं । पहले भाग में 360, दूसरे भाग में 437 और तीसरे भाग में 385 खण्ड हैं । इसको तलवार ब्राह्मण के नाम से भी पुकारा जाता है इसके वाक्य ताण्ड्य, षड्विश शतपथ और तैत्तिरीय संहिता के वाक्यों से बहुधा मिलते हैं । इसमें ऐसे मंत्रों की संख्या पर्याप्त है जो पहली बार इसी में मिलते हैं । मुद्रित वैदिक वाङ्मय में वे इसी रूप में नहीं मिलते । इसके आरंभ के खण्डों में अग्निहोत्र का विशद् वर्णन है और अत्यंत सुन्दर उपमाएं भी हैं । इसका संकलन महर्षि जैमिनि और उन्ही के शिष्य तलवार ने किया था ।

16. जैमिनीय ब्राह्मण :—इसमें 84 खण्ड हैं। इसे तलवकार शाखा की ऋष्यक्रमणी समझना चाहिए। आग्नेय आदि सामपर्वों और ग्रामगेय गान और अरण्य के ऋषि इसमें दिए हैं।

17. जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण :—इसमें 4 अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में अनुवाक और प्रत्येक अनुवाक में खण्ड हैं। यह कौथुम शाखा का एक पुराण ब्राह्मण है। इसमें अभिचार कर्म और तंत्र प्रक्रिया का विशेष वर्णन है। यज्ञ व यज्ञ प्रक्रिया के अतिरिक्त इसमें ओ३म् एवं गायत्री मंत्र का विश्लेषणात्मक अध्ययन है। इसमें अनेक गाथाएं हैं।

अथर्ववेदीय ब्राह्मण

18. गोपथब्राह्मण :—इसमें दो भाग हैं एक पूर्व और दूसरा उत्तर। पूर्व भाग में 5 प्रपाठक व 135 कण्डिकाएँ हैं और उत्तर भाग में 6 प्रपाठक व 123 कण्डिकाएं हैं। इस प्रकार इसमें कुल मिलाकर 11 प्रपाठक और 258 कण्डिकाएं हैं। इसमें सृष्टि-प्रक्रिया का वर्णन, स्वयंभू-ब्रह्म का तप, ओंकार का महत्व और ओंकार के विषय में 36 प्रश्नोत्तर, गायत्रीमंत्र की विशद् व्याख्या एवम् पुनर्मृत्यु आदि अनेक विषयों का वर्णन है।

4. आरण्यक

ब्राह्मण ग्रंथों का वह भाग जिसमें यज्ञों का आध्यात्मिक महत्व बताया गया है, आरण्यक के नाम से पुकारा जाता है। जंगल में पढ़े-पढ़ाये जाने के कारण इनको आरण्यक नाम की संज्ञा दे दी गयी। इनमें मन, प्राण, वाक् आदि सूक्ष्म तत्वों एवं यज्ञों के ऊपर विशेष रूप से आध्यात्मिक ढंग से विचार-विमर्श किया गया है। इनका आकार अत्यंत सूक्ष्म है। पं० भगवद्दत लिखते हैं—

जंगल में रहकर यज्ञों के रहस्य को बताने वाली जिस

विधा का पाठ किया जाता था, वह विद्या जिन ग्रंथों में सुरक्षित है उन्हें आरण्यक कहते हैं ।

–वैदिक वाङ्मय का इतिहास
(तृतीय भाग पृष्ठ 230)

गोपथ ब्राह्मण में आरण्य का पुराना नाम रहस्य भी है; उपलब्ध आरण्यक ग्रंथ निम्नलिखित है–

ऋग्वेदीय आरण्यक

1. ऐतरेय आरण्यक :–इसमें 5 आरण्यक हैं । पहले आरण्यक में 5 अध्याय, दूसरे में 7, तीसरे में 2, चौथे में 1 और पांचवें में 3 अध्याय हैं । इस प्रकार इसमें कुल 18 अध्याय हैं । इसके विषय में कीथ लिखते हैं ।

As might be expected they (the verbal coincidences between the Aitaraya Brahmana and the Aranyaka are constant and show unmistakably the connexion of the two work).

ऐतरेय ब्राह्मण और आरण्यक की भाषा में उनके शब्द प्रयोग में बहुत समानता है । इससे ज्ञात होता है कि कि दोनों ग्रंथों का परस्पर संबंध है । इसके अंत के 4 अध्याय ही ऐतरेय उपनिषद् के नाम से जाने जाते हैं ।

2. कौषीतकि आरण्यक :–यह भी कौषतकि ब्राह्मण की भाँति अलग ग्रंथ है ।

3. शाखायन आरण्यक :–इसमें 15 अध्याय हैं और 137 खण्ड हैं । यह ऐतरेय आरण्यक से बहुत मिलता जुलता है ।

यजुर्वेदीय आरण्यक

4. बृहदारण्यक (माध्यान्दिन) :–इसमें 6 अध्याय और 44 अवान्तर ब्राह्मण है । प्रस्तुत आरण्यक माध्यन्दिन शतपथ का ही भाग है और इसके साथ इसका संकलन हुआ था ।

5. बृहदारण्यक (काण्व) :–इसमें छः अध्याय हैं और सारे आरण्यक में 47 ब्राह्मण हैं । वैदिक वाङ्मय का अध्ययन करने वाले

इस ग्रंथ का पाठ करते हैं। याज्ञवल्क्य एवं विदेहराज जनक इसके मुख्य पात्र हैं। इसी में गार्गी एवं मैत्रेयी जैसी स्त्रियां ब्रह्मवादिनियों का उत्कृष्ट रूप उपस्थित करती हैं। ब्रह्म आत्मा एवं पुर्नजन्म का इसमें बड़ा विशद् वर्णन किया गया है।

6. तैत्तिरीयारण्यक :–इसमें 10 प्रपाठक हैं। तैतिरीयोपनिषद् इस आरण्यक का भाग है। सातवें प्रपाठक के आरम्भ से नवम् के अन्त में इसकी समाप्ति होती है। यज्ञोपवीत शब्द भी सर्वप्रथम इसमें मिलता है।

7. मैत्रायणीय आरण्यक :–इसमें 7 प्रपाठक और 73 खण्ड हैं। इसको बृहदारण्यक चरकशसमेकत के नाम से भी पुकारा जाता है।

8. सामवेदीय आरण्यक :–इसमें 4 अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय अनुवाक एवं खण्डों में विभक्त है। इसकी भाषा ब्राह्मण की भाषा है। चौथे अध्याय के 10वें अनुवाक से केनोपनिषद आरम्भ होता है।

जो मृत्यु के उपरांत भी सबके लिए शांतिप्रदा।
हैं उपनिषद् विद्या हमारी एक अनुपम सम्पदा।।
इसलोक और परलोक से करती वह एकत्र है।
हम क्या करें उसकी प्रतिष्ठा हो रही सर्वत्र है।।

–आचार्य चन्द्रशेखर

5. उपनिषद्

उपनिषद् शब्द की उत्पत्ति उप+नि+षद् शब्दों से हुई है। जिनका क्रमशः अर्थ है–समीप+निष्ठापूर्वक श्रवण+परमात्मा की प्राप्ति। अतः उपनिषद् का शब्दिक अर्थ हुआ परमात्मा की प्राप्ति के लिये निष्ठापूर्वका श्रवण करना और ज्ञानार्जन करना।

वस्तुतः उपनिषदों में अनेक रत्न भरे पड़े हैं। उनमें से अपनी इच्छानुसार अपनी पसंद के रत्न चुनकर विभिन्न ऋषियों ने अनेक मालाएं गूंथ डाली। जो विद्या मुमुक्षुओं को ब्रह्म प्राप्त करा देती है जिसमें दुःख का सर्वथा शिथिलीकरण हो जाता है, वही आध्यात्मिक विद्या उपनिषद् हैं। ये ज्ञान के भण्डार हैं। इन्हीं से भारतीय दर्शन निकले हैं। इस प्रपंचमय संसार के सारे दुःख, दारिद्रय, पाप-ताप मार भगाने के लिये इनका ज्ञान रामबाण है। जैसेकि स्वामी शिवानंद लिखते हैं–

The upanishads are the gift and goal of the Vedas.

उपनिषदें वेदों का सार एवं लक्ष्य हैं।

इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद के शब्दों में–

The Upanishads are the Bible of India. They occupy the same place of the New testament does.

उपनिषदें भारत में बाइबल हैं। उनकी वही महत्ता है जोकि न्यूटैस्टैमैंट की है।

उपनिषदों की संख्या के विषय में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न विचार हैं। अतः इनकी निश्चित् संख्या के विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। परन्तु 108 उपनिषदें उपलब्ध हैं। इनमें से महर्षि दयानंद ने केवल 10 उपनिषदों को ही प्रामाणिक माना है। इन्हें वैदिक उपनिषद के नाम से पुकारा जाता है। ये उपनिषदें वेदों का अन्तिम भाग हैं। अतः इन्हें वेदांत के नाम से पुकारा जाता है। इनके नाम निम्नलिखित हैं।

1. ऋग्वेद – ऐतरेय, तैत्तिरीय।

2. यजुर्वेद – ईश, कठ एवं बृहदारण्यक।

3. सामवेद – केन और छांदोग्य।

4. अथर्ववेद – मुण्डक, माण्डूक्य और प्रश्न।

इन उपनिषदों का सारामृत है आध्यात्मिक उन्नति जोकि मानव जीवन का मुख्योद्देश्य है। जैसे एक हिन्दी कवि के शब्दों में–

जीवन का उद्देश्य नहीं, केवल पीना-खाना ।

जीवन का उद्देश्य है जगमें, जगना और जगाना । ।

1. ईशोपनिषद् :–वस्तुतः सारी उपनिषद यजुर्वेद के 40वें अध्याय के प्रथम मंत्र की विशद् व्याख्या हैं । इसी को सर्वप्रथम उपनिषद् माना जाता है । इसके प्रथम मंत्र का शब्द ईश होने के कारण इसका नाम ईशोपनिषद् पड़ गया । इसमें बताया गया है कि प्रभु संसार के कण-कण में दृष्टिगोचर हो रहे हैं । अतः संसार के सारे भोगों को त्यागमय भाव से भोगो । उनसे चिपटो मत क्योंकि यह धन किसी का नहीं है । यजुर्वेद के 39 अध्यायों में कर्मकाण्ड और 40वें अध्याय में ज्ञानकाण्ड का वर्णन है । प्रस्तुत उपनिषद् यजुर्वेद का 40वां अध्याय है जिसमें जगत्, जीव और जगदीश का उल्लेख है । यह सारा उपनिषद् पद्यमय है और इसमें 18 मंत्र हैं ।

2. केनोपनिषद् :– इसमें सबसे पहले केन शब्द का प्रयोग हुआ है । इसी कारण इसका केनोपनिषद् नाम पड़ा गया । इसे ब्राह्मणोपनिषद् के नाम से भी पुकारा जाता है । इसमें 9 अध्याय हैं । यह पद्य एवं गद्य दोनों में है । इसमें ब्रह्म ही समझाया गया है । यह गुरु और शिष्य की बातचीत के रूप में हैं । इसके पूर्व के 8 अध्यायों में अन्तःकरण की शुद्धि के लिये विभिन्न कर्म एवं उपासनाओं का वर्णन है । इसका प्रतिपाद्य विषय परम्ब्रह्म तत्व बहुत ही गहन है, अतएव इसको भली भाँति समझाने के लिये गुरु शिष्य सम्वाद के रूप में तत्व का निरूपण है ।

3. कठोपनिषद :–इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियां हैं । यह उपनिषद् पद्यमय है । यह आख्यायिका तैतिरीय ब्राह्मण एवं महाभारत के अनुशासन पर्व के 106वें अध्याय में भी मिलती है । इसका आधार गीता है । इसमें नचिकेता और यम के सम्वाद रूप में परमात्मा के रहस्यमय तत्व का बड़ा ही विशद् विवेचन किया गया है । नचिकेता ने यमराज से निम्नलिखित तीन प्रश्न पूछे–

1. मरने के बाद मनुष्य का क्या होता है?

2. आत्मा का क्या स्वरूप है?

3. अमृतत्व क्या है?

आदि मूल प्रश्न थे जिनका उत्तर नचिकेता यम से जानना चाहता था। अंत में नचिकेता का दृढ़ निश्चय देखकर यम ने उसे आत्मा की अमरता का ज्ञान दिया था।

शरीर रथ है। आत्मा इनका स्वामी है। बुद्धि सारथि है। मन लगाम है। इन्द्रियां घोड़े हैं। ज्ञानी ही इन्द्रियों को वश में रखत है अज्ञानी नहीं।

4. प्रश्नोपनिषद् :—यह उपनिषद् अथर्ववेद का है। इसमें पिप्पलाद ऋषि सुकेशा आदि छः ऋषियों के प्रश्नों का उत्तर है। अतः इसका नाम प्रश्नोपनिषद् पड़ गया। वस्तुतः मुण्डकोपनिषद् में संक्षिप्त रूप में वर्णित कुछ विषयों को लेकर इसमें सविस्तार समझाया गया है। यह गद्य में लिखा गया है। इसमें बताया गया है प्राण 5 हैं—हृदय में प्राण, गुदा में अपान, नाभि में समान, नाड़ियों में व्यान और सुषुमणा नाड़ी में उदान रहते हैं। ब्रह्मचर्य इन प्राणों की रक्षा का सर्वोत्तम उपाय है।

5. मुण्डकोपनिषद् :—यह उपनिषद् अथर्ववेद की शौनकी शाखा में है। इसमें ब्रह्म विद्या का प्रतिपादन किया गया है। इसमें महर्षि शौनक अंगिरा ऋषि से ब्रह्म के विषय में प्रश्न करते हैं। अंगिरा उनको ब्रह्म का रहस्य समझाते हैं। गुण सम्पत्ति से प्रस्तुत उपनिषद् अन्य सारे उपनिषदों की मुकुटमणि के रूप में प्रसिद्ध होने के कारण यह मुण्डक अर्थात् शब्द उपयुक्त सिद्ध होता है। यह ओ३म् से आरम्भ होता है। यहाँ पर बतलाया गया है कि प्रत्येक कार्य के लिये व्यक्ति को प्रभु-स्मरण करना चाहिए। इसका आधा भाग पद्यमय और आधा भाग गद्यमय है।

6. माण्डूक्योपनिषद् :—यह उपनिषद् अथर्ववेद का है। सारे आर्ष उपनिषदों में यह सबसे छोटा उपनिषद् है। इसमें केवल 12 मंत्र

हैं और यह पद्यमय है। इसको गौडपाद नामक आचार्य ने श्लोकों में विस्तार के साथ समझाया है। यह सारे वेदांत का सार है। अन्य उपनिषदों से इसका विषय अधिक गंभीर है। मोक्ष प्राप्ति के लिये यह सहायक है। ब्रह्मविद्या समझाने वाले सारे उपनिषदों में यह मुख्य माना जाता है। यह निम्नलिखित 4 प्रकरणों में विभक्त है–

1. अगम :–इसमें आत्मतत्व के उपाय के रूप में ओंकार तत्व के गूढार्थ का निरूपण किया गया है।

2. वैतथ्य :–इसमें द्वैत के उपशमन की आवश्यकता समझाई गई है।

3. अद्वैत :–इसमें अद्वैततत्व पर विचार व्यक्त किया गया है।

4. अलात शान्ति :–इसमें परस्पर विरुद्ध अवैदिक मतान्तरों का वर्णन है।

7. ऐतरेयोपनिषद् :–यह उपनिषद् ऋग्वेद का है। इसमें केवल तीन अध्याय हैं। इसमें ब्रह्मविद्या का निरूपण किया गया है। इसमें बताया गया है कि आत्मा शब्द 'अत्' धातु से बना है जिसके तीन निम्नलिखित अर्थ हैं–

1. व्यापकत्वा, 2. भक्षण, 3. गमन।

यह ब्रह्म के भी लक्षण हैं।

8. तैत्तिरीयोपनिषद् :–यह उपनिषद् यजुर्वेद का है और यह गद्य में है। तैत्तिरीय आरण्यक के सातवें आठवें और नौवें अध्यायों को ही तैत्तिरीयोपनिषद् कहा जाता है। इसके अध्यायों का नाम वल्ली है। इसमें निम्नलिखित तीन वल्लियां हैं।

1. शिक्षावल्ली, 2. ब्रह्मवल्ली, 3. भृगुवल्ली।

इसमें पाँच प्राण और पाँच कोषों का वर्णन है। इसमें बताया गया है कि सत्य बोलें, धर्म का आचरण करें और स्वाध्याय में प्रमाद न करें।

9. छांदोग्योपनिषद् :–यह सामवेद का उपनिषद् है। इसमें 8 अध्याय हैं जिन्हें प्रपाठक के नाम से पुकारा जाता है और 630 ऋचाएं

हैं । इसमें ओ३म् की व्याख्या की गई है । ज्वाला और सत्यकाम का सुन्दर वार्तालाप है । महर्षि उद्दालक का श्वेतकेतु को उपदेश भी द्रष्टव्य है । इसमें दृष्टांत द्वारा समझाया गया है कि आत्मा शुद्ध चैतन्य है । प्रश्न 5 अध्यायों में विविध उपासना क्रम और अंतिम 3 अध्यायों में ज्ञानोपदेशों का वर्णन है । उपासना के लिये चित्त शुद्धि एवं ब्रह्मज्ञान के लिये चित्तैकाग्रता आवश्यक पूर्वांग निश्चित् किये गये हैं । कर्म से चित्तशुद्धि एवं उपासना से चितैकाग्रता उपलब्ध होती है । इस प्रकार कर्म एवं उपासना ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के कारण होते हैं । इसी कारण शास्त्रों में सर्वप्रथम कर्म तत्पश्चात् उपासना और अन्त में ज्ञान का उल्लेख है ।

10. बृहदाराण्यकोपनिषद् :–यह उपनिषद् शतपथ ब्राह्मण का अंतिम भाग है । यह आकार में बड़ा है । इसमें 6 अध्याय और 435 श्लोक हैं । वस्तुतः मूल उपनिषद् में केवल 4 अध्याय ही हैं शेष 2 अध्याय इसके परिशिष्ट है । 3 और 4 अध्यायों में याज्ञवल्क्य ने राजा जनक को आध्यात्मिक तत्व का उपदेश दिया है । इसको वन में बैठकर लिखा गया था । इसी कारण इसका नाम भी बृहदारण्यक पड़ गया । बड़ा होने के कारण तो इसमें अरण्यों (जंगलों) में स्थित ऋषि कुटी से और महाराजा जनक की विद्वत् सभा में होने वाले अनेक मनोरम सम्वादों का समीकरण है; इसलिये बृहद् आरण्यक इसका नाम सिद्ध होता है । इसके अतिरिक्त इसमें ब्रह्म विद्या से कुछ विभिन्न विषयों का भी समावेश प्रस्तुत किया गया है । वस्तुतः इसमें ब्रह्म का ही विशेषतः विवेचन किया गया है । इसमें सर्वप्रथम सृष्टि की उत्पत्ति, प्राण का तत्व, ब्रह्म की सर्वव्यापकता और चारों वर्णों की रचना का भी वर्णन किया गया है । अतः उपनिषदों के विषय में डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक Indian philosophy में लिखा है–

The Upnishads are the concluding portion of the Vedas and one, therefore, called the Vedants or the end of the Vedas.

उपनिषद् वेदों के अंतिम भाग हैं और इसलिये इन्हें वेदांत अथवा वेदों का निष्कर्ष नाम से पुकारा जाता है ।

इसी प्रकार इसके विषय में जर्मनी के महान् दार्शनिक शौपनहार ने लिखा है–

In the world there is no study so beneficial and so everlasting as that of the Upanishads. They are the product of the highest wisdom. It has been the solance of my life. It will remain the solance of my death. It is destined sooner or later to become the faith of people.

संसार में ऐसा कोई अध्ययन नहीं है जो उपनिषदों के समान उपयोगी तथा ऊँचा उठाने वाला हो, यह उच्चत्तम बुद्धि की उपज है उसी से मुझे जीवन में शांति मिली है और उसी से मुझे मृत्यु के समीप भी शांति मिलेगी । एक न एक दिन उपनिषदों की शिक्षा ही मानव मात्र की शिक्षा का केन्द्र बनेगी ।

निष्कर्षतः एक वाक्य में इतना ही कहना काफी होगा कि वैदिक वाङ्मय भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है और संसार के सारे मतों के साहित्य से श्रेष्ठ एवं वैज्ञानिक है । अतः इसके विषय में निम्नलिखित उक्ति पूर्णतः चरितार्थ होती है :–

खुद कमाओ, खुद खाओ, यह मानव की प्रकृति है ।
कमाओ नहीं छीनकर खाओ यह मानव की विकृति है ।
खुद कमाओ दूसरों को खिलाओ, यही हमारी संस्कृति है ।

6. कल्पसूत्र

'कल्प' शब्द के अर्थ हैं–विधि, नियम, न्याय आदि । सार रूप तथा निर्दोष वाक्य का नाम सूत्र है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि विधियों, नियमों अथवा न्यायों के जो संक्षिप्त एवं दोषशून्य वाक्यसमूह हैं, वे कल्पसूत्र हैं । ये वेदों के अंश हैं । भारतीय संस्कृति के कल्पसूत्र हैं । हिन्दू-धर्म ही क्या, संसार के सभी प्रसिद्ध धर्मों की जड़ कर्मकाण्ड

है—उनका मूल क्रियात्मक रूप ही है। कल्पसूत्रों की तो आधारशिला ही कर्मकाण्ड है तथा हिन्दू-धर्म के सारे कर्म, सब संस्कार, निखिल अनुष्ठान और समूची प्रायः कल्पसूत्रों से ही उत्पन्न हैं। इसलिये हिन्दू-जीवन के सारे नित्य, नैमित्तिक, काम्य और निष्काम कर्म, सारी क्रियाएं, सम्पूर्ण संस्कृति अशेष अनुष्ठान समझने के लिए एकमात्र अवलम्ब ये सूत्र ही हैं। प्राचीन आर्यों के सामाजिक आचार-विचार, उनकी जीवनचर्या और उनके कर्मानुष्ठान आदि को ये सूत्र बड़ी ही सुन्दरता से बताते हैं। धर्मानुष्ठानों में मानव-वृत्तियों को संलग्न करना तथा धार्मिक विधियों और नियमों में व्यक्तियों और समाज का जीवन संयत करना, इन सूत्रों का उद्देश्य है और सचमुच नियमबद्ध एवं संयत करके इन सूत्रों ने हिन्दू-जीवन एवं समाज को दिव्य व भव्य बनाने में बड़ी सहायता की है।

कल्पसूत्र तीन तरह के होते हैं—श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र। वैदिक संहिताओं में कहे गये यज्ञादि-विषयक विधान और विवरण देनेवाले सूत्रों का 'श्रौतसूत्र' कहा जाता है। गृहस्थ के जन्म से लेकर मृत्यु तक के समस्त कर्तव्यों और अनुष्ठानों का जिनमें वर्णन है, उन्हें 'गृहसूत्र' नाम दिया गया है। विभिन्न पारमार्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कर्तव्यों, आश्रमों, विविध जातियों के कर्तव्यों, विवाह, उत्तराधिकार आदि का जिनमें विवरण है, उनकी संज्ञा 'धर्मसूत्र' है। पातंजल महाभाष्य (पस्पशाह्निक)—में लिखा है—ऋग्वेद की 21, यजुर्वेद की 101, सामवेद की 1000 और अथर्ववेद की 9 शाखाएं हैं; अर्थात् सब मिलाकर चारों वेदों की 1131 शाखाएं हैं; परंतु इन दिनों हमारी इतनी दयनीय दशा है कि इन शाखाओं के नाम तक नहीं मिलते। प्राचीन साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि जितनी शाखाएँ थीं, उतनी ही संहिताएँ थीं, उतने ही ब्राह्मण और आरण्यक थे, उतनी ही उपनिषदें थीं और उतने ही कल्पसूत्र भी थे; परंतु आजकल इनमें से कोई भी पूरा-का-पूरा नहीं मिलता। किसी शाखा की संहिता मिलती है, किसी की नहीं; किसी का

केवल ब्राह्मण-ग्रंथ मिलता है तो किसी का कल्पसूत्रमात्र। आश्वलायन शाखा वालों की अपनी कोई संहिता नहीं मिलती; उनके केवल कल्पसूत्र मिलते हैं। बेचारे शाकल-संहिता को ही अपनी संहिता मानते हैं और ऐतरेय शाखा वालों के ब्राह्मणों, आरण्यकों और उपनिषदों से ही अपने काम चलाते हैं। शौनक के 'चरण-व्यूह' में चरक-शाखा को विशिष्ट स्थान दिया गया है; परन्तु न तो इस शाखा की कोई संहिता या ब्राह्मण ही मिलते हैं, न उसकी उपनिषदें आदि ही उपलब्ध हैं। काठक शाखा की संहिता तो मिलती है; परंतु ब्राह्मण, आरण्यक नहीं। मैत्रायणी और राणायणीय शाखाओं की भी यही बात है। अथर्ववेद की पिप्पलाद-शाखा की तो केवल संहिता ही मिलती है। अतः कल्पसूत्र भी तो शाखाओं के अनुसार 1131 उपलब्ध होने चाहिये; परंतु इन दिनों प्रायः 40 पाये जाते हैं।

वेदाध्ययन के लिये जो हमारी तुच्छ-बुद्धि है, उसको देखते हुए हमें ऐसा विश्वास हो रहा है कि मिले हुए ग्रंथ भी लुप्त और उच्छिन्न हो जायेंगे। चारों वेदों की 11 संहिताएँ मिली हैं यूरोपियनों की कृपा से। लाखों रुपये व्यय करके यूरोपियनों ने ही यूरोप के विविध देशों में इन संहिताओं को छापा है। भारतवर्ष में तो 11 में से केवल 5 संहिताएँ ही छापी गई हैं तो भी कदाचित् विश्वसनीय पाठ नहीं हैं; सबमें अशुद्धियाँ हैं। व्याकरण रट लिया और बन पड़ा तो कुछ ज्योतिष तथा कुछ काव्य की पोथियाँ देख डालीं और यदि महापण्डित या धर्मगुरु बनने की इच्छा हुई तो न्याय-वेदान्त की परीक्षाएँ दे दीं। बस, भोली जनता में चारों वेदों के वक्ता बन गये; वेद-विज्ञान की घटा और छटा बाँधने लगे। जनता को, शिष्यों और यजमानों को क्या पता कि ये 'महापण्डित', 'धर्म-गुरु' वेद तो क्या, वेद का 'व' भी नहीं जानते।

1. श्रौतसूत्र :—वैदिक-धर्म और वैदिक-संस्कृति के प्राण ये कल्पसूत्र क्या हैं?श्रौत या वैदिक यज्ञ 14 प्रकार के हैं—7 'हविर्यज्ञ' और 7 'सोमयज्ञ'। अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रहायण, चातुर्मास्य, निरूढपशुबन्ध और सौत्रामणी—ये 7 चरु पुरोडाश द्वारा

हवि से सम्पन्न होते हैं, इसलिये ये 'हविर्यज्ञ' कहलाते हैं। अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अरित्र और आप्तोर्यामा को 'सोमयज्ञ' कहा जाता है;

कई संहिताओं और आश्वलायन, लाट्यायन आदि श्रौतसूत्रों में इन 14 यज्ञों का विस्तृत विवरण मिलता है। इसमें संदेह नहीं कि इन दिनों इन यज्ञों का प्रचार नहीं है, परंतु गृह्यसूत्रों के यज्ञ नित्यकर्म माने जाते हैं; इसलिये उन्हें पाक या प्रधान यज्ञ कहा जाता है। पाक-यज्ञों में से कुछ तो ज्यों-के-त्यों वर्तमान समाज में प्रचलित हैं और कुछ रूपान्तरित होकर।

गृह्यसूत्रकारों ने सात प्रकार के गृह्य या पाक-यज्ञ माने हैं 'पार्वण-यज्ञ' अर्थात् पूर्णिमा और अमावस्या के दिन किया जाने वाला यज्ञ। इसे इस समय भी यथावत् किया जाता है। 'अष्टका यज्ञ' –यह अवश्य ही बहुत रूपान्तर प्राप्त कर चुका है; 'श्रावणी-यज्ञ' –यह अब तक काफी प्रचलित है। 'आश्वयुजी-यज्ञ' अर्थात् आश्विन मास में किया जाने वाला यज्ञ, 'आग्रहायणी-यज्ञ' –यह अगहन में किया जाने वाला यज्ञ 'नवान्न' का अनुकल्प बन चुका है। 'चैत्री-यज्ञ' अर्थात् चैत्र में किया जाने वाला यज्ञ, जो बिल्कुल दूसरा रूप ग्रहण कर चुका है।

14 श्रौतयज्ञों और सात पाक यज्ञों के सिवा धर्मसूत्रों और गृह्यसूत्रों में इन पाँच यज्ञों का वर्णन है–देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ और मनुष्ययज्ञ। हवन को 'देवयज्ञ', बलिरूप में अन्न आदि दान करने को 'भूतयज्ञ', पिण्ड-दान और तर्पण को 'पितृयज्ञ', वेदों के अध्ययन-अध्यापन अथवा मंत्रपाठ को 'ब्रह्मयज्ञ' तथा अतिथि को अन्न आदि देने को 'मनुष्ययज्ञ' कहा जाता है। ये पाँचों महायज्ञ भी अब तक ज्यों-के-त्यों प्रचलित हैं।

उक्त सूत्रों में इन संस्कारों का बहुत सुन्दर विवरण है–गर्भाधान, पुंसवन अर्थात् पुत्रजन्मानुष्ठान, सीमन्तोन्नयन अर्थात् गर्भवती स्त्री का केशविन्यास, जातकर्म अर्थात् संतान होने पर

आवश्यकीय अनुष्ठान, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन, वेदाध्ययन के समय महानाम्नीव्रत, महाव्रत, उननिषद्व्रत, गोदानव्रत, समावर्तन विवाह, अन्त्येष्टि। ये सोलहों संस्कार भी प्रचलित हैं।

इस प्रकार 14 श्रौतयज्ञ, 5 पाकयज्ञ, 5 महायज्ञ और 16 संस्कार मिलकर 42 कर्म हमारे लिये कल्पसूत्रकारों ने बताये हैं। सूत्रों में इन 42 का विशद् वर्णन पढ़ने पर अपने पूर्वजों की सारी जीवन-लीला दर्पण की तरह दिखायी देने लगती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सूत्रकारों ने 42 कर्म बताये हैं; परंतु साथ ही सूत्रकार ऋषियों ने सत्य, सद्गुण और सदाचार पर भी बहुत जोर दिया है। धर्मसूत्रकार गौतम चत्वारिंशत् कर्मवादी हैं—उन्होंन अन्त्येष्टि और निष्क्रमण को संस्कार नहीं माना है—16 में 14 ही संस्कार माने हैं। अतः उन्होंने गौतमधर्मसूत्र (8.24.25) में लिखा है—

'जो 40 संस्कारों से युक्त हैं; परंतु सद्गुण से शून्य हैं, वे न तो ब्रह्मलोक जा सकेंगे, न ब्रह्म को पा सकेंगे। हाँ, जो नित्य- नैमित्तिक यज्ञों को करते हैं और काम्य-कर्मों के लिये कोई चेष्टा नहीं करते अथवा चेष्टा करने में असमर्थ हैं, वे भी सद्गुणों से युक्त होने पर ब्रह्मलोक को जा सकेंगे तथा ब्रह्म को पा सकेंगे।' इसी प्रकार वशिष्ठ धर्मसूत्र 63 में भी कहा गया है—

'जैसे चिड़ियों के बच्चे पंख हो जाने पर घोंसले को छोड़कर चले जाते हैं, वैसे ही वेद और वेदांग भी सद्गुणशून्य मनुष्य का त्याग कर देते हैं।'

इन वचनों से प्रतीत होता है कि सत्य और सदाचार को हमारे सूत्रकारों ने कितना महत्व दिया है—एक प्रकार से उन्होंने सत्य और सदाचार को हिन्दू-धर्म की भित्ति ही माना है और हमको उनसे यही महती शिक्षा भी मिलती है।

जैसे ऋग्वेद के ऐतरेय और कौषीतकि नाम के दो ब्राह्मण अत्यन्त प्रसिद्ध हैं, वैसे ही इसके आश्वलायन और शांखायन नाम के दो कल्पसूत्र भी अतीव विख्यात हैं। आश्वलायन श्रौतसूत्र में 12

अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय वैदिक यज्ञों के विवरण से पूर्ण है। कहा जाता है कि आश्वलायन ऋषि शौनक ऋषि के शिष्य थे ओर ऐतरेय आरण्यक के अन्तिम दो अध्याय गुरु और शिष्य ने मिलकर बनाये थे। ऐतरेय ब्राह्मण और आरण्यक में जो वैदिक यज्ञ विस्तृत रूप से विवृत किये गये हैं, संक्षेप में उन्हीं के विधान आदि का निर्देश करना इस श्रौतसूत्र का उद्देश्य है। इस पर गार्ग्यनारायणि की संस्कृत-वृत्ति है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कात्यायनश्रौतसूत्र, आश्वलायन श्रौत्रसूत्र, बौधायन श्रौत्रसूत्र, लाट्यायन श्रौत्रसूत्र आदि मुख्य ग्रंथ है।

2. गृह्यसूत्र :—आश्वलायन-गृह्यसूत्र निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में विवाह, पार्वण, पशुयज्ञ, चैत्ययज्ञ, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, गोदानकर्म, उपनयन और ब्रह्मचर्याश्रम का वर्णन है। द्वितीय में श्रावणी, आश्वयुजी, आग्राहायणी, अष्टका, गृहनिर्माण और गृहप्रवेश का वर्णन है। तृतीय में पंचमहायज्ञों का वर्णन है। इन यज्ञों को प्रतिदिन सम्पन्न करके हमारे पूर्वज अन्न-जल ग्रहण करते थे और इन दिनों भी कुछ लोग ऐसा ही करते हैं। इसी अध्याय में ऋग्वेद के विभिन्न मण्डलों के ऋषियों के नाम पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त सुमन्तु, जैमिनि, वैशम्पायन, पैल तथा सूत्रों, भाष्यों और भारत एवं महाभारत के लेखकों के नाम भी पाये जाते हैं। आधुनिक काल में महर्षि दयानन्द कृत 'संस्कार विधि- और डॉ० ज्वलंत कुमार शास्त्री कृत संस्कारशिक्षा नामक पुस्तकों में भी विभिन्न 16 संस्कारों का बड़ा विशद वर्णन है।

आश्वलायन गृह्यसूत्र पर गार्ग्यनारायणि, कुमारिल भट्ट और हरदत्त मिश्र की वृत्ति, कारिका और व्याख्या है। शांखायन श्रौतसूत्र 18 अध्यायों में विभाजित है। दर्शपूर्णमास आदि वैदिक यज्ञों का इसमें भी उल्लेख है; साथ ही वाजपेय, राजसूय, अश्वमेध, पुरुषमेध और सर्वमेध आदि विशाल यज्ञों का विशद् वर्णन है।

शांखायन गृह्यसूत्र निम्नलिखित 6 अध्यायों में पूर्ण हुआ है। प्रथम अध्याय में पार्वण, विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, गर्भरक्षण, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, अन्नप्राशन, चूडाकरण और गोदानकर्म का वर्णन है। द्वितीय में उपनयन एवं ब्रह्मचर्य का उल्लेख है। तृतीय में स्नान, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, वृषोत्सर्ग, आग्रहायणी, अष्टका आदि का विवरण है। चतुर्थ में श्राद्ध, अध्यायोपाकरण, श्रावणी, आश्वयुजी, आग्रहायणी और चैत्री का वर्णन है। पंचम और षष्ट अध्यायों में कुछ प्रायश्चितों का उल्लेख है। शांखायन-शाखा की संहिता नहीं पायी जाती। इस वेद की केवल शाकल-संहिता ही छपी है।

3. धर्मसूत्र :—वसिष्ठधर्मसूत्र ऋग्वेद का ही धर्मसूत्र है। इसके टीकाकार गोविन्द स्वामी का भी ऐसा ही विचार है। यह निम्नलिखित तीन अध्यायों में विभक्त है। पहले में साधारण विधि, आर्यावर्त की सीमा, पंचमहापातक और छः विवाह-पद्धतियों का वर्णन है। दूसरे में विविध जातियों के कर्तव्य का निर्देश है। तीसरे में वेद-पाठ की आवश्यकता और चौथे में अशुद्धियों का विचार है। चौथे अध्याय में सूत्रकार ने मनुके अनेक वचनों को उद्धृत किया है, जिससे विदित होता है कि अत्यन्त प्राचीन काल में कोई मनु-सूत्र भी था, जिसके आधार पर ही वर्तमान मनुस्मृति बनी है। पाँचवें में स्त्रियों का कर्तव्य, छठे में सदाचार, सातवें में ब्रह्मचर्य, आठवें में गृहस्थ-धर्म, नवें में वानप्रस्थ-धर्म और दसवें में भिक्षुधर्म वर्णित है। ग्यारहवें में अतिथि-सेवा, श्राद्ध और उपनयन की बातें हैं। बारहवें में स्नातक-धर्म, तेरहवें में वेद-पाठ और चौदहवें में खाद्य-विचार विवृत हैं। पंद्रहवें में दत्तक-पुत्र-ग्रहण, सोलहवें में राजकीय-विधि और सतरहवें में उत्तराधिकार का वर्णन है। अठारहवें में चाण्डाल, वैण, अन्त्यावसायी, राभक, पुल्कस, सूत, अम्बष्ठ, उग्र, निषाद, पारशव आदि दस मिश्र या मिली हुई जातियों का विवरण है। उन्नीसवें में राजधर्म विवृत है। बीसवें से अठाईसवें तक में प्रायश्चित और उनतीसवें तथा तीसवें अध्यायों में दान-दक्षिणा का विवरण है।

सामवेद की दो शाखाओं के दो श्रौतसूत्र अत्यन्त विख्यात हैं—कौथुमशाखा का लाट्यायन श्रौतसूत्र या मशक श्रौतसूत्र और राणायणीय शाखा का द्राह्याण श्रौतसूत्र। दोनों में वैदिक यज्ञों का विशद् वर्णन है।

सामवेद (कौथुमशाखा)—का गोभिलगृह्यसूत्र निम्नलिखित चार प्रपाठकों में विभक्त हैं। प्रथम प्रपाठक में साधारण विधि, ब्रह्मयज्ञ, दर्शपूर्णमास आदि का विवरण है। द्वितीय में विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, चूडाकरण और उपनयन आदि का वर्णन है। तृतीय में ब्रह्मचर्य, गोपालन, गोयज्ञ, अश्वयज्ञ और श्रावणी आदि का वर्णन है। चतुर्थ में विविध अन्वष्टका-काम्यसिद्धियों के उपयोगी कर्म गृहनिर्माण आदि का वर्णन है।

सामवेदन का गौतमधर्मसूत्र अत्यन्त विख्यात है। यह 28 अध्यायों में पूर्ण हुआ है। प्रथम और द्वितीय अध्यायों में उपनयन और ब्रह्मचर्य; तृतीय में भिक्षु (संन्यासी) एवं वैखानस वानप्रस्थ) का धर्म और चतुर्थ तथा पंचम अध्यायों में गृहस्थ के धर्म का वर्णन है। इस प्रसंग में गौतम ने इन आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख किया है—ब्राह्म, प्राजापत्य, आर्ष, दैव, गान्धर्व, आसुर, राक्षस और पैशाच। प्रथम के चार उत्तम हैं और अन्त के चार अधम हैं। पंचम अध्याय में अठारह प्रकार की मिली हुई जातियों का या मिश्र जाति का उल्लेख है। षष्ठ में अभिवादन, सप्तम में आपत्कालीन वृत्ति-समूह और अष्टम में 40 संस्कारों का वर्णन है। नवम में स्नातक-धर्म, दशम में विभिन्न जाति-धर्म, एकादश में राजधर्म, द्वादश में राजकीय विधि, त्रयोदश में विचार और साक्ष्य-ग्रहण, चतुर्दश में अशुद्धि-विचार, पंचदश में श्राद्ध-नियम, षोडश में वेद-पाठ, सप्तदश में खाद्य-विचार और अष्टादश मे ंस्त्री-विवाह आदि हैं। एकोनविंश से सप्तविंश अध्यायों में प्रायश्चित-विवरण है। अष्टाविंश अध्याय में उत्तराधिकार का विचार है।

यजुर्वेद के दो भेद हैं—कृष्ण और शुक्ल। कृष्ण-यजुर्वेद के ग्रंथ

अन्य सभी वेदों से अधिक मिलते हैं। इसकी संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, कल्पसूत्र, प्रातिशाख्य आदि प्रायः अधिकांश मिलते हैं। इस वेद की मैत्रायणी शाखा का मानवधर्मसूत्र पाया जाता है। इसके अतिरिक्त बौधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, भारद्वाज, काठक आदि कितने ही सूत्र-ग्रंथ इस वेद के मिले हैं।

बौधायन-श्रौत्रसूत्र 19 प्रश्नों में पूर्ण हुआ है। बौधायन गृह्मसूत्र और बौधायन'कल्पसूत्र में कर्मान्तसूत्र, द्वैधसूत्र तथा शुल्बसूत्र (यज्ञवेदी-निर्माण के लिये रेखागणित के नियम) आदि भी पाये जाते हैं। बौधायन ने लिखा है—'अवन्ती, मगध, सौराष्ट्र, दक्षिण, उपावृत, सिन्धु और सौवीर के निवासी मिश्रजाति हैं।' इससे प्रतीत होता है कि बौधायन के समय, 1250 ख्रीष्टपूर्व में इन प्रदेशों में अनार्य भी रहते थे। आगे चलकर लिखा गया है— 'जिन्होंने आरट्ट, कारस्कर, पुण्ड्र, सौवीर, ब्रङ्ग, कलिंग आदि का भ्रमण किया है, उन्हें पुनस्तोम और सर्वपृष्ठा यज्ञ करने पड़ते हैं।' इससे प्रतीत पड़ता है कि आर्य लोग इन प्रदेशों को हीन समझते थे।

बौधायन-धर्मसूत्र के पहले प्रश्न में ब्रह्मचर्य-विवरण, शुद्धा-शुद्ध-विचार, मिश्रजाति-वर्णन, राजकीय विधि और 8 प्रकार के विवाहों की बातें हैं। दूसरे प्रश्न में प्राचश्चित, उत्तराधिकार तथा स्त्रीधर्म, गृहस्थधर्म, चार आश्रम और श्राद्ध का वर्णन है। तीसरे में वैखानस आदि के कर्तव्य और चान्द्रायण आदि प्राचश्चितों का वर्णन है। चौथे में काम्य-सिद्धि आदि का वर्णन है।

आपस्तम्ब के भी सारे कल्पसूत्र पाये जाते हैं। आपस्तम्ब आन्ध्र में उत्पन्न हुए थे। द्रविड़ और तैलंग ब्राह्मण अपने को आपस्तम्ब-शाखी और अपनी संहिता को तैत्तिरीय, संहिता कहते हैं। आपस्तम्ब कल्पसूत्र तीस प्रश्नों में परिपूर्ण हुआ है। प्रथम चौबीस प्रश्न श्रौतसूत्र हैं, पचीसवाँ प्रश्न परिभाषा है, छब्बीसवाँ और सत्ताईसवाँ प्रश्न गृह्यसूत्र है। अट्ठाईसवाँ और उनतीसवाँ प्रश्न धर्मसूत्र है और तीसवां शुल्बसूत्र है। आपस्तम्बगृह्यसूत्र में ब्रह्मचर्य द्वारा शास्त्रशिक्षा,

गृह-निर्माण, मासिक श्राद्ध, विवाह आदि संस्कार तथा श्रावणी, अष्टका आदि का विवरण है। आपस्तम्बधर्मसूत्र के प्रथम प्रश्न में ब्रह्मचर्य, शास्त्रशिक्षा, खाद्य- विचार और प्रायश्चित की बातें हैं। द्वितीय में चार आश्रमों और राजकीय विधि का वर्णन है।

हिरण्यकेशी आपस्तम्ब के पीछे के पुरुष हैं। हिरण्यकेशी-कल्पसूत्रों की रचना आपस्तम्ब के कल्पसूत्रों को सामने रखकर की गयी है। ये सब तैत्तिरीय शाखा के कल्पसूत्र हैं। हिरण्यकेशीय का दूसरा नाम सत्याषाढ है। शुक्लयजुर्वेद के (माध्यन्दिन और काण्व दोनों के) दो कल्पसूत्र अत्यन्त प्रसिद्ध हैं– कात्सायन-श्रौतसूत्र और पारस्कर-गृहसूत्र। कात्यायन-श्रौतसूत्र के 18 अध्याय इस वेद के शतपथ-ब्राह्मण के 9 काण्डों के क्रमानुवर्ती हैं। अवशिष्ट अध्याय सौत्रामणी, अश्वमेध, नरमेध, सर्वमेध आदि के विवरणों से पूर्ण हैं। व्रात्यों के विवरण में मगध के ब्रह्मबन्धुओं का भी उल्लेख है। ब्रह्मण्यानुष्ठान से शून्य अधम ब्राह्मणों का ब्रह्मबन्धु कहा गया है।

पारस्कर-गृहसूत्र 9 काण्डों में है। प्रथम में विवाह, गर्भाधान आदि संस्कारों का वर्णन है। द्वितीय में कृषि-प्रारम्भ, विद्या-शिक्षा, श्रावणी आदि का विवेचन है। तृतीय में गृह-निर्माण, वृषोत्सर्ग, श्राद्ध आदि का वर्णन है। अन्य गृह्यसूत्रों की तरह ही इसके भी अन्यान्य काण्डों के वर्णन हैं।

अब तक जितने कल्पसूत्रों का वर्णन हो चुका है, उनके अतिरिक्त भी कुछ कल्पसूत्र पाये जाते हैं; परन्तु उनकी प्रामाणिकता में संदेह है। इसीलिये यहाँ उनका उल्लेख नहीं किया गया है। उल्लिखित कल्पसूत्रों पर अनेकानेक खण्डित और अखण्डित भाष्य-टीकाएँ भी मिलती हैं; परंतु अधिकांश हस्तलिखित और अप्रकाशित दशा में ब्रिटिश म्यूजियम (लंदन), इम्पीरियल लाइब्रेरी (कलकत्ता और दिल्ली), भांडारकर ओरियंटल रिसर्च इन्स्टीट्यूट (पूना) तथा देश-विदेश के विभिन्न पुस्तकालयों में पड़ी हैं।

वैदिक संहिताओं का अर्थ, तत्व और रहस्य समझने के लिये

जैसे ब्राह्मण, आरण्यक, प्रातिशाख्य, निरुक्त, निघण्टु, मीमांसा, बृहद्देवता, अनुक्रमणी, शिक्षा, चरणव्यूह आदि का अध्ययन आवश्यक है, वैसे ही, बल्कि कहीं-कहीं उनसे भी अधिक आवश्यक कल्पसूत्रों का पठन है। श्रौतसूत्रों से यज्ञ-रहस्य समझने में आश्चर्यजनक सहायता मिलती है। गृह्यसूत्रों से स्थल-विशेष में अद्‌भुत साहाय्य प्राप्त होता है। प्राचीन हिंदू-जीवन, प्राचीन हिंदूसमाज और प्राचीन हिंदूधर्म समझने के लिये तो ये सूत्र अद्वितीय हैं ही। धार्मिक नियमों से अपना और अपने समाज का जीवन संयत तथा उन्नत करने के लिये तथा निःश्रेयस की प्राप्ति के लिये तो ये सूत्र अनूठे साधन हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि मानव, गौतम, बौधायन, आपस्तम्ब, वसिष्ठ, हिरण्यकशिप, विष्णु आदि मुख्य धर्मसूत्र ग्रंथ हैं।

यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, वसिष्ठस्मृति, पाराशरस्मृति आदि बीसों प्रसिद्ध स्मृतियों की उत्पत्ति और रचना इन्हीं कल्पसूत्रों से हुई है। समस्त हिंदू-संस्कारों, राजधर्मों, व्यवहार-दर्शनों, दाम्पत्य-धर्मों, दाय-भागों, संकर-जाति-विवरणों और प्रायश्चितों के आधार भी ये ही कल्पसूत्र हैं। इनके बिना प्राचीन नियमों एवं प्रथाओं का समझना कठिन है। महर्षि दयानन्द ने कर्मकाण्ड को मूल संहिताओं के आधार पर रखा है। अतः उन्होंने ''संस्कारविधि'' में एक संस्कार में चारों वेदों के अलग-अलग अनेक गृहसूत्रों को क्रियाकाण्ड के लिए प्रस्तुत किया है। यह विशेषता और भी है कि मध्यकालीन याज्ञिकों ने अथर्ववेद के मंत्रों का किसी भी क्रिया में विनियोग नहीं किया। परन्तु महर्षि दयानन्द ने इस मंत्र को स्वीकार नहीं किया और यथास्थान चारों वेदों के मंत्रों को क्रिया-कर्म में विनियोग कर दिया।

7. वेदांग (शास्त्र या अंग)

वेदों का प्रत्येक शब्द उदात्त, अनुदात, स्वरित आदि उच्चारण भेदों से बंधा है। अतः उनको उनके उच्चारण ध्वनि में शुद्धता की अपेक्षा थी। इसी कारण सहायक कृतियों का सृजन करना पड़ा। वेदांग की परिभाषा करते हुए महर्षि दयानंद ''आर्योद्देश्यरत्नमाला' में लिखते हैं–

जो शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष आर्ष सनातन शास्त्र हैं, इनको वेदांग कहते हैं। वेदांग के निम्नलिखित 6 अंग हैं।

(1) शिक्षा – इससे वेदमंत्रों का उच्चरण आदि जाना जाता है। इसके तीन अंग हैं–उच्चारण, शब्दों का स्वरूप और उनका अर्थ। इसमें पाणिनि कृत पाणिनीय शिक्षा आदि ग्रंथ आते हैं।

(2) कल्प – इससे यज्ञ का विधान आता है। कल्प का अर्थ है बनाना-सुधार-संस्कार द्वारा निर्माण करना। इसमें साधारण यज्ञ से लेकर अश्वमेध आदि बड़े-बड़े यज्ञों के प्रकार का वर्णन है।

(3) व्याकरण – इसमें वैदिक व्याकरण के नियम होते हैं। व्याकरण का शब्दार्थ है पृथक्करण। इस प्रकार शब्दों की चीरफाड़ करने में सहायक शास्त्र, व्याकरण कहलाता है। इसमें पाणिनि कृत अष्टाध्यायी, पातंजलि कृत महाभाष्य आते हैं।

(4) निरुक्त – निरुक्त में 14 अध्याय हैं। वस्तुतः इसमें 12 अध्याय हैं और 2 परिशिष्ट रूप में हैं। निरुक्त वैदिक शब्दों की निरुक्ति है। निरुक्ति का अर्थ है व्युत्पत्ति। निरुक्त का सर्वमान्य मत है कि प्रत्येक शब्द किसी न किसी धातु के साथ अवश्य सम्बद्ध रहता है। सारे शब्द किसी न किसी धातु से निर्मित हैं। यह वैदिक शब्दों की व्याख्या करता है। यास्कमुनि कृत निघण्टु पर ही स्वयं यास्क मुनि का भाष्य निरुक्त कहलाता है। निघण्टु विश्व का प्राचीनतम शब्दकोष माना जाता है।

(5) छंद – भिन्न अक्षरों की एक निश्चित् संख्या निर्धारित हो उसे छंद कहते हैं । छंदों की गिनती सात स्वरों के अनुपात से सात है । कुछ और भी छंद हैं । परन्तु वे इन्हीं सात छंदों के अन्तर्गत आते हैं । इसमें पिंगल ऋषि कृत पिंगल सूत्र आते हैं ।

(6) ज्योतिष – इसमें भूगोल एवं खगोल विद्या आदि का उल्लेख है । गणित और विज्ञान इसका मुख्य प्रयोजन है । वस्तुतः गणित ज्योति वेदानुकूल है परन्तु फलित ज्योतिष नहीं क्योंकि यह केवल अनुमान मात्र है । ज्योतिष के विषय में कहा गया है–

तद्वदेतां शास्त्राणां नागानां मणयो यथा ।
तद्वद्वेतां शास्त्राणां गणितं मूर्धनि स्थितम् । ।

जैसे मयूरों के सिर पर शिक्षा, सर्पों के शिर पर मणियां होती हैं । उसी प्रकार वेदांग शास्त्रों में गणित सबसे ऊपर है । वेदांग के विषय में आचार्य भास्कर लिखते हैं–

शब्द शास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी,
श्रोत्र मुक्त निरुक्तं च कल्पः कैरो ।
या तु शिक्षास्य वेदस्यसा नासिका,
पदपद्यन्दयं छंद आद्यैबुद्यै । ।

व्याकरण वेद के मुख के, ज्योतिष नेत्रों के और निरुक्त श्रोत्र के समान हैं, कल्प हाथों के समान, शिक्षा नासिका के समान हैं । पांव छंद के समान हैं । ऐसा प्राचीन विद्वानों का विचार है ।

8. उपांग (दर्शन या शास्त्र)

उपांग संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि है । संसार की किसी भी भाषा में इनकी कोटि का सूत्र रूप ग्रंथ नहीं है । इनके अध्ययन से बुद्धि का पूर्ण विकास होता है । ज्ञानकाण्ड के परम सहायक ये ग्रंथ हैं । ये सारी सृष्टि विद्या का प्रमाण और तर्क के आधार पर सूत्र रूप में

वर्णन करते हैं । मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है । उस मोक्ष का स्वरूप क्या है तथा उस तक कैसे पहुँचा जा सकता है । इसी का सूक्ष्म रूप से विवेचन करने वाले शास्त्रों को दर्शन के नाम से पुकारा जाता है । इनमें मुख्यतः जीव, जगत और जगदीश का सूक्ष्म रूप से विचार किया गया है । 6 दर्शनों में कुल 4832 सूत्र हैं ।

महर्षि दयानंद ने अपनी पुस्तक ''आर्योद्देश्यरत्नमाला'' में उपांग की परिभाषा करते हुए लिखा है–

जो ऋषि मुनिकृत मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदांत छः शास्त्र हैं, इनको उपांग कहते हैं ।

वस्तुतः भारतीय दर्शनों की संख्या 6 है जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है–

(1) योग दर्शन – इसके रचयिता महर्षि पतंजलि हैं । इसमें केवल 195 सूत्र हैं । इस प्रकार यह सब दर्शनों से छोटा दर्शन है । इसमें चित्तवृत्तियों के निरोध को योग बतलाते हुये मोक्ष प्राप्ति के साधन रूप यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि इन अष्टांगों की पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की गई है । अतः इसके अनुसार योग द्वारा ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है । पतंजलि का योगसूत्र, योग दर्शन का मूल ग्रंथ है ।

(2) वैशेषिक दर्शन – इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद हैं । इसमें 369 सूत्र हैं । इसमें 6 विभिन्न पदार्थों (द्रव्य, गुण, कर्म, साान्य, विशेष और समवाय) के तत्वज्ञान से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है । कणाद का वैशेषिक सूत्र इसका मूलग्रंथ है ।

(3) सांख्य दर्शन – इसके रचयिता महर्षि कपिल हैं इसमें 525 सूत्र हैं । इसके अनुसार पुरुष, प्रकृति, बुद्धि, अहंकार मन सहित 10 इंद्रिया (कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, नाक, हाथ, पैर, वाणी, मलद्वार, मूत्रद्वार पांच तन्मात्रायें (शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध) और पांच महाभूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथिवी) इन 25 तत्वों के ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है । सांख्यसूत्र, सांख्यदर्शन का मूल ग्रंथ

है । इसके अतिरिक्त इसमें सत्व, रज और तम त्रिगुणात्मक प्रकृति के विकार रूप महान् अहंकार आदि मौलिक तत्वों की व्याख्या की गई है ।

(4) न्याय दर्शन – इसके रचयिता महर्षि गौतम हैं । इसमें 544 सूत्र हैं । इसके अनुसार प्रत्यक्ष, अनुमान, आप्त, दृष्टांत, सिद्धान्त, तर्क, निर्णय, वाद आदि 16 पदार्थों के तत्वज्ञान से मोक्ष प्राप्ति का वर्णन किया गया है । तर्क इसमें मुख्य विषय है । गौतम का न्यायसूत्र इस दर्शन का मूल ग्रंथ है ।

(5) वेदांत दर्शन – इसके लेखक महर्षि वेदव्यास हैं । इसको ब्रह्मसूत्र, उत्तर मीमांसा के नाम से भी पुकारा जाता है । इसमें 555 सूत्र हैं । इसके अनुसार ब्रह्म ही संसार का कारण है । उसी का ज्ञान होने पर मोक्ष होता है । इसका मूल ग्रंथ वादरायण लिखित वेदांतसूत्र ब्रह्म है । इसी ब्रह्मसूत्र के व्याख्यान में आगे के कई रूप सामने आये हैं । जैसे–

(क) अद्वैतवाद – इसके प्रवर्तक आचार्य गौडपाद थे । इसके बाद आचार्य शंकर इसके मुख्य प्रचारक एवं संस्थापक हुये । आदि शंकराचार्य ने ब्रह्मसूत्र के ऊपर शारीरिक भाष्य लिखकर इस दर्शन को प्रतिष्ठित किया । इस दर्शन के अनुसार ब्रह्म सत्य है और जगत् क्षणभंगुर है । माया के कारण यह संसार स्वप्न के समान प्रतीत होता है ।

(ख) विशिष्ट अद्वैतवाद – इसके प्रवर्तक आचार्य रामानुज थे । इसके अनुसार जीव एवं जगत् ब्रह्म के विशेषण है । अतः जब ब्रह्मस्वरूप है तो उसके साथ उसके विशेषणरूप जीव और जगत् भी सत्य है । रामानुजाचार्य ने इस मत की स्थापना ब्रह्म सूत्र के अपने श्रीभाष्य में की ।

(ग) द्वैतवाद – इसके प्रवर्तक माध्वाचार्य थे । इसके अनुसार जीव व ब्रह्म दो तत्व है और दोनों में भेद है ।

(घ) अचिन्त्य भेदाभेदवाद – इसके प्रवर्तक श्रीनिम्बाकाचार्य हुए । इसके मत के अनुसार ब्रह्म और जीव में जल और लहर तथा शब्द और

अर्थ के समान भेद भी है और अभेद भी है ।

(ङ) शुद्धाद्वैतवाद – इसके प्रवर्तक श्री बल्लभाचार्य जी थे ।

6. मीमांसादर्शन – इसके रचयिता महर्षि जैमिनि थे इसमें 2644 सूत्र है । इस प्रकार यह दर्शन सब दर्शनों से बड़ा है । इसके अनुसार वैदिक यज्ञों के विधिपूर्वक सम्पादन से ही अभीष्टफल की प्राप्ति हो सकती है ।

अतः इसमें वैदिक याज्ञिक विधियों पर मुख्य रूप से विचार किया गया है । इसमें धर्म, कर्म की शुद्धता का वर्णन भी किया गया है । जैमिनि का मीमांसा सूत्र इस दर्शन का मूल ग्रंथ है । कुमारिल, प्रभाकर आदि इसके मुख्य आचार्य हुए हैं ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि षट-दर्शनों में समन्वय स्थापित कर वेद के विचारों की दर्शनों में आई धारा को शुद्धरूप दिया गया है ताकि वेद एवं वैदिक साहित्य का संबंध एक शृंखलाबद्ध रूप में संसार के दार्शनिकों के समक्ष प्रस्तुत हुआ है जिससे कि वेदों की धारणा को समझने में सुलभ कुंजी प्राप्त हो गई है । स्वामी रामदेव जी भी षट्-दर्शनों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं–

षट् दर्शनों का मूल विषय है–आत्म-तत्व का दर्शन, संसार या प्रकृति का सम्यक् दर्शन तथा परमात्मा तत्व का साक्षात्कार ।

–जीवन दर्शन पृष्ठ 78

उपरिलिखित विवरण के अध्ययन से प्रतीत होता है कि साहित्य समाज का दर्पण एवं दीपक है । यदि समाज सूर्य है तो साहित्य उसकी किरणें । जैसे पुष्प से सुगंध भिन्न नहीं हो सकती उसी प्रकार समाज से साहित्य भी भिन्न नहीं हो सकता । अतः साहित्य एवं समाज का अटूट संबंध है । इसलिये लेखक समाज की परिस्थितियों के अनुकूल ही साहित्य-सृजन करता है । अतः वैदिक साहित्य-सृजन भी वैदिककाल की परिस्थितियों के अनुकूल हुआ । वैदिक साहित्य के अन्तर्गत वेद, उपवेद, ब्राह्मणग्रंथ, अरण्यक, उपनिषद् एवं कल्पसूत्र वेदांग, दर्शन आदि आते हैं ।

अब प्रश्न उठता है कि आर्ष एवं अनार्ष ग्रंथों के अंतर्गत कौन-कौन से ग्रंथ आते हैं। साधारणतः आर्ष ग्रंथों के आरंभ में ओ३म् एवं अथ शब्द लिखा जाता है। परन्तु इसके विपरीत अनार्ष ग्रंथों में मंगलाचरण से विभिन्न देवी, देवताओं की आडम्बर युक्त वन्दना की जाती है। जैसे डॉ० भवानी लाल भारतीय लिखते हैं–

जिन ग्रंथों से हठ, दुराग्रह, अंधविश्वास तथा पाखण्ड को प्रोत्साहन मिले, मनुष्य का विवेक कुण्ठित हो, जो मनुष्य की वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित न करें, दयानंद की दृष्टि में ऐसे ग्रंथ अनार्ष, अपठनीय वर्ज्य तथा त्याज्य हैं।।

--आर्ष ग्रंथों को प्रमाण मानने का सिद्धान्त

सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि आदि ऋषि कृत ग्रंथ आर्ष ग्रंथ हैं। अठारह पुराण, रामचरितमानस, बाइबल, क़ुरान अनार्ष ग्रंथ हैं। अतः बहुधा आजकल आर्य समाज को वैदिक साहित्य के साथ-साथ आर्ष एवं अनार्ष ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिये जो वेदानुकूल हो उसे अपने जीवन में अपनाना चाहिये।

लेखक द्वारा प्रकाशित एवं निःशुल्क वितरित पुस्तकों की सूची :–

1. रामचरितमानससार
2. गीतासार
3. उपनिषद्सार
4. सत्यार्थप्रकाशसार
5. भक्ति
6. सुखीजीवन
7. आत्मबोध
8. वेदवाणी
9. वैदिकसाहित्य
10. अमृतवाणी
11. महर्षि दयानंद
12. स्वामी विवेकानंद
13. शरणागति
14. वैदिक रामायण
15. क्या आप जानते हैं ?
16. शेर-ओ-शायरी

लेखक द्वारा अप्रकाशित पुस्तकों की सूची :–

1. वैदिक उपनिषद्वाणी
2. वैदिक दर्शनवाणी
3. वैदिक महाभारत
4. वैदिक गीता
5. अमर धर्मग्रंथ
6. अमर नीतिग्रंथ
7. पुराणपरिचय
8. ईश्वरसिद्धि
9. राष्ट्रभाषा हिन्दी
10. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
11. महावीर हनुमान
12. योगिराज श्रीकृष्ण
13. आदिशंकराचार्य
14. आचार्य चाणक्य
15. दस गुरु
16. आर्यसमाज के महामानव
17. स्वामी रामतीर्थ
18. संस्कार
19. गीतांजलि
20. आर्यसमाज
21. ओ३म्
22. गायत्रीरहस्य
23. ज्ञानामृत
24. यज्ञ
25. संत
26. संतवाणी
27. सामान्य हिन्दी (भाग I-II)
    (सब कक्षाओं के लिये)
28. **Great Thoughts**
29. **General English (Part I to V)**
    (For All Classes)